॥ ओ३म् ॥

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

महर्षि दयानन्द सरस्वती

टंकारा समाचार

(श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट का मासिक पत्र)

मार्च, 2015 वर्ष 18, अंक 3
विक्रमी सम्वत् 2071
एक प्रति का मूल्य 10/- रुपये

दूरभाष (दिल्ली) : 23360059, 23362110
दूरभाष (टंकारा) : 02822-287756

वार्षिक शुल्क 100 रुपये
ई-मेल : tankarasamachar@gmail.com
कुल पृष्ठ 24

टंकारा ऋषिबोधोत्सव

टंकारा में प्रण लें वेद/सत्यार्थ प्रकाश घर-घर पहुंचाएगें- पूनम सूरी

ऋषिबोधोत्सव सहर्षोल्लास सम्पन्न

मुख्य यज्ञवेदी से यज्ञ संचालन करते ब्रह्मा श्री आचार्य रामदेव एवम् टंकारा गुरुकुल के ब्रह्मचारी वेद पाठ करते हुए।

दिनांक 11 फरवरी से 28 फरवरी 2015 तक इस वर्ष ऋषि बोधोत्सव उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्पूर्ण ऋषिबोधोत्सव के कार्यक्रम के अध्यक्ष आदरणीय आर्यरत्न श्री पूनम सूरी जी (प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवम् डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली) के आशीर्वाद एवम् मार्गदर्शन में, ऋग्वेद पारायण यज्ञ 11 फरवरी से टंकारा स्थित उपदेशक विद्यालय के आचार्य रामदेव जी के ब्रह्मत्व में प्रारम्भ हुआ। इस यज्ञ के मुख्य यजमान मुंजाल परिवार के श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल एवं श्री एस के शर्मा, मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा थे। पूरे सप्ताह आर्य जगत् के प्रसिद्ध गायक एवं भजनोपदेशक श्री सत्यपाल पथिक जी के मधुर भजन प्रातः एवं सायं होते रहे। इसी अवसर पर बिजनौर (उत्तर प्रदेश) के प्रसिद्ध भजनोपदक श्री कुलदीप शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता जी भी उपस्थित थे जिन्होंने अपनी तेजस्वी एवं सिंह गर्जना से भजनों से ऋषि भक्तों का मन मोह लिया ।

दिनांक 15 फरवरी 2015 को रात्रि 8 बजे से 10 बजे तक उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिसमें भजन, कव्वाली, लघु नाटिका, भाषण इत्यादि सम्मिलित थे। इस सत्र की अध्यक्षता श्री लधाभाई पटेल (मुम्बई) ने की और मुख्य अतिथि के रूप में श्री एस के शर्मा (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) श्री अरूण अब्रोल (मुम्बई) श्रीमती अरूणा सतीजा (जयपुर) एवं श्री योगेश मुंजाल (ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट) उपस्थित थे । विशेष आमन्त्रित के रूप में पं. रमेश मेहता (पूर्व स्नातक टंकारा) एवं श्रीमती राज लूथरा ने सबकी उपस्थिति में अपार जन समूह व ब्रह्मचारियों के कार्यक्रम की सराहना की। ब्रह्मचारियों द्वारा ''राजनैतिक दुर्दशा'' पर

'टंकारा समाचार' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आचार्य रामदेव जी का वरण श्री योगेश मुंजाल एवम् डॉ. एस.के. शर्मा। यज्ञवेदी पर आसीन योगेश मुंजाल एवम् सुधीर अंजु मुंजाल। यज्ञवेदी पर दीप प्रज्वलित करती श्रीमती अंजु मुजाल

लघु नाटिका प्रस्तुत की गई जिसका उद्देश्य था कि पूर्व नेताओं और वर्तमान के नेताओं द्वारा किये जा रहे कार्यो का आंकलन।

दिनांक 16 फरवरी 2015 को प्रातः 6 बजे से प्रभात फेरी निकाली गई, जिसमें भारत से उपस्थित सभी राज्यों के ऋषि भक्तों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। इसके उपरान्त योग एवं आयुर्वेद की कक्षा एक घंटे तक निरन्तर चलती रही।

मुख्य यजमान थे। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि मन्त्री श्री मोहन भाई कुण्डारिया पधारे और यज्ञ में आहुति डाली और यज्ञ में उपस्थित आर्य जनों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि टंकारा ट्रस्ट के प्रति मेरी अपार श्रद्धा है। इस उपलक्ष्य में मेरे योग्य कोई भी कार्य होगा मैं उसे सहर्ष स्वीकार करके पूर्ण करने का प्रयास करूंगा। इस अवसर पर पं. सत्यपाल पथिक एवं ब्रह्मचारियों के भजन प्रस्तुत किये गये और पानीपत से विशेष रूप में उपस्थित हुए वैदिक प्रवक्ता पं. जगदीश

ऊपर चित्र में ब्रह्मा आचार्य रामदेव जी एवम् कार्यक्रम के बोधाध्यक्ष डॉ. विनय विद्यालंकार। मंच पर आसीन डॉ. एस.के. शर्मा सपत्नीक, श्री ओम प्रकाश शर्मा एवम् श्री अनिल अवरोल। सभी सन्यासीवृन्द यजमानों को आशीर्वाद देते हुए।

प्रातः 8 बजे यज्ञ उद्घाटन समारोह के रूप में आयोजित किया गया जिसमें श्रीमती एवं श्री एस. के. शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, श्रीमती एवं श्री राजीव चौधरी, श्रीमती अमृतापाल आदि चन्द्र बसु के विशेष प्रवचन हुए। प्रवचन इतने प्रभावशाली थे कि प्रातः 8 बजे से लेकर 12 बजे तक ऋषि भक्तों की उपस्थिति कम नहीं हुई।

(शेष पृष्ठ 9 पर)

टंकारा के स्थानीय सांसद एवम् भारत सरकार में कृषि राज्य मन्त्री श्री मोहन भाई कुण्डारियां यज्ञ पुर्णाहुति पर उपस्थित हुए

आपके बच्चे

एक समय था जब माता-पिता बच्चों को पारम्परिक तरीकों से गुरुकुलों से पाल-पोसकर बड़ा करते थे। लेकिन आज हालात बदल चुके हैं और बच्चों को समय के मुताबिक ढालने की शिक्षा देने से पहले हमें खुद कुछ सबक लेने होंगे। हम बच्चों को आदर्श मूल्यों के बारे में तभी सिखा सकते है जबकि उन्हें इस विषय में बताने के साथ-साथ खुद वैसा ही आचरण भी करें-यानी उनके लिए हमें अपना उदाहरण पेश करना होगा।

बेशक हम हमेशा अपने बच्चों के सर्वश्रेष्ठ पिता नहीं बन पाये लेकिन हम ऐसा करने की पूरी कोशिश करते है। पिता होने के नाते हम अब भी इस कहावत से कुछ सीख लेते है।

बच्चे अपने माता-पिता की बातों पर भले ही कान न दें, मगर उनकी आदतें अपनाने से वे कभी नहीं चूकते।

अभिभावक और बच्चों को लेकर हमने यह निष्कर्ष निकाला है कि अच्छे अभिभावक बनने और बच्चों को संस्कारवान बनाने पर 70:30 का फार्मूला लागू होता है-यानी 70 प्रतिशत प्रयास और 30 प्रतिशत प्रभु कृपा। बच्चों के सफल भविष्य में प्रभु कृपा की भूमिका बेशक अहम है लेकिन हमारा अनुभव कहता है कि यदि हम कड़ी मेहनत और सकारात्मक प्रयासों पर ध्यान दें तो हमारा 30 प्रतिशत भी पलट सकता है।

जीवन भी बड़ा ही मजेदार है। हमें आए दिन मारूति, ओनिडा, यमाहा और हजारों दूसरी ब्रांड के मैनुअल देखने को मिलते हैं। मगर बच्चों को कैसे संभाला जाए, इस बारे में कोई सामग्री उपलब्ध नहीं होती। हम आपके साथ अपने उन अनुभवों को बांटना चाहते हैं जो बतौर पिता अपने 70 प्रतिशत प्रयासों के सन्दर्भ में बटोरे है। इनसे आपको अपने बच्चे के लिए मैनुअल तैयार करने में मदद मिलेगी और अगर आप सफल हो जाएं तो इस मैनुअल को बच्चों के साथ बैठकर, हाथ में लाल स्याहीवाले पेन को लेकर नियमित रूप से पढ़े। अखबारों और पत्रिकाओं की कतरनों से अपनी खुद की स्क्रैपबुक तैयार करें। अपने दोस्तों और सम्बन्धियों से बातचीत करें। गौर से देखें। प्रयोग करें। सोचे-विचारें। अपनी राय व्यक्त करें। और उस मैनुअल को अपने हिसाब से बदल डालें।

अभिभावक के रूप में आप तभी सफल होते हैं जब आपके बच्चे बड़े होकर अच्छे इंसान बन जाते हैं। अकसर हम अपने बच्चों पर अव्यावाहारिक अपेक्षाओं का बोझ लाद देते हैं। कभी-कभी हम अभिभावक के तौर पर बच्चों से कितनी बड़ी-बड़ी ख्वाहिशें रखते हैं जबकि वास्तव में हमारा ऐसा इरादा नहीं होता।

कभी-कभी जो हम अपने जीवन में नहीं बन पाये वह आशाएं हम अपने बच्चों पर लाद देते है। चाहे उसकी रूचि ऐसा बनने में हो या ना हो यह जाने बिना। अपने बच्चों में उनकी योग्यता/प्रतिभा को पहचानने और उसी दिशा में आगे बढ़ने में प्रोत्साहित करे। आप 70 प्रतिशत ही उसके सहायक हो सकते है 30 प्रतिशत प्रभु खुद कार्य करते हैं।

बच्चे भविष्य में कैसे बनते हैं, इसमें अभिभावकों की बड़ी भूमिका होती है। इसके लिए ढेर सारा आत्म-नियन्त्रण और धैर्य चाहिए और साथ ही यह सब करने की बुद्धिमानी भी जिसे देखकर बेशक यह लगता हो कि यह अनुशासन का कठोर सबक है, अगर वास्तव में वह आवश्यक हो। बच्चे पूंजी होते हैं इसलिए बच्चों को संभालने से पहले माता-पिता को खुद को संभालना आना चाहिए।

बच्चे जहाजों की तरह होते हैं और एक बार समुद्र में उतरने के बाद उन्हें खुद ही अपना ध्यान रखना होता है। हम हमेशा उनका ध्यान नहीं रख सकते। इसलिए जब तक वे हमारे साथ है तब तक हमें उन्हें अच्छी शिक्षा देनी चाहिए। ऐसा हम कुछ नहीं करें जिससे उन्हें शर्मिन्दा होना पड़े। हमें उनके साथ वह सब बांटना चाहिए जो हम पढ़ते हैं, देखते हैं, सोचते हैं या करते हैं। हमें अपने से बड़ो की इज्जत करनी चाहिए ताकि वे भी ऐसा ही करें। यह याद रखें कि वे हम पर हमेशा नजर रखे हुए हैं, ठीक उस तरह जेसे ईश्वर हम सबको देखता रहता है। माना कि हम सभी से गलतियां होती हैं-कभी छोटी और कभी काफी बड़ी भी। लेकिन हमें हमेशा माफी मांगने के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने शब्दों और कर्मो दोनों से।

हमें इस बात की परवाह भी नहीं करनी चाहिए कि हम उन्हें वह सब नहीं दे सकते जो दूसरे अभिभावक दे रहे हैं। मसलन, गोवा या कश्मीर में छुट्टियों का लुत्फ या स्कूल कॉलेज जाने के लिए बी.एम. डब्ल्यू गाड़ियां। लेकिन हमें उस वक्त उन्हें सहलाने के लिए उनके पास मौजूद रहना चाहिए जब उन्हें कोई चोट पहुंचे या वे निराशा से घिरे हों। हमें इस बात की कोशिश करनी चाहिए कि जीवन की बेहतरीन मुस्कान उनके चेहरों पर खिली हो और जब वे लड़खड़ाएं तो हम उन्हें सहारा देने के लिए मौजूद हों। जब उनकी आंखो से आंसू हों तो उन्हें यह भरोसा होना चाहिए कि हम उन्हें पोछने के लिए वहां होंगे।

अभिभावकों और बच्चों के सम्बन्धों पर विचार करते हुए हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि अभिभावकों को हर मौके पर, हर दिन खुद को बच्चों की जगह रखकर देखना चाहिए। क्या आपने कभी खुद से इस बात की शिकायत की है कि आपका बच्चा आपको नहीं समझता? अगली बार जब आप यह बात दोहराएं तो सोचे कि ऐसा आज नहीं बल्कि आपका बच्चा अपने आप से कह रहा है। निश्चित रूप से आप दोनों के बीच बातचीत का सिलसिला टूटा हुआ है और इसे फिर से शुरु करने के लिए आपको हर सम्भव प्रयास करना चाहिए।

बच्चों को पालपोसकर बड़ा करना अभिभावकों के लिए महत्वपूर्ण मगर मुश्किल काम है। यह ऐसा काम है जो सभी माता-पिता करते हैं, भले ही उन्हें इसका अनुभव या औपचारिक प्रशिाण हो अथवा नहीं।

बच्चों को पालने-पोसने के विषय पर गौर करने, पढ़ने, विचार-विमर्श करने तथा अपने खुद के तीस वर्षो के अनुभव और अभिभावकों के साथ इस बारे में चर्चा के बाद हमने जो सामग्री तैयार की है, उसे आप 'अपने बच्चों का पालन-पोषण कैसे करें' नाम दे सकते हैं। इसमें बताए गए उपाय काफी सरल है और आप आज से ही उन पर अमल करना शुरु कर सकते हैं। याद रखें कि अपने बच्चे को हर लिहाज से अच्छा बनाने की तैयारी कभी भी शुरु की जा सकती है।

अजय टंकारावाला

(उपाय जानने के लिए पृष्ठ 21-22 पर पढ़े)

आर्य अभिनन्दन

आर्य समाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु 60 वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी। पत्र व सूचना देने का पता- ठाकुर विक्रम सिंह, ए-41, द्वितीय तल, लाजपत नगर-2, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-110024

अध्यात्म एवं दर्शन के समन्वय से विश्वशांति

❒ स्व. मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति

मनुष्य की जन्मजात और एकमात्र यह इच्छा रहती है कि वह सदैव 'सुखी' आनन्द रहे। उसके जीवन में कभी भी दुःख की छाया न पड़े और वह निश्चिन्त होकर अपनी जीवन-यात्रा पूर्ण करे। मनुष्य की यह इच्छा बाहरी रूप से तो बहुत अच्छी लगती है, कौन दुःख पसन्द करता है-कोई नहीं। सभी 'सुखानन्द' के भागीदार बनना चाहते हैं। परन्तु क्या कभी हमने अपनी पात्रता, क्षमता, योग्यता और धारणात के विषय में कभी विचार किया है? इसके विपरीत, कोई भी बन्दी बनकर कारागार के सीखचों के पीछे जाना नहीं चाहता। अपराधी मनोवृत्ति के तत्व भी 'सुख' पसन्द करते हैं। परन्तु किसी अक्षय शक्ति के नियम से बाधित होकर मनुष्य को दुःख-सुख के पालने में झूलना ही पड़ता है। ऐसा क्यों? इसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य अपनी इच्छा की तृप्ति के समानान्तर अपनी कार्यक्षमता, योग्यता, स्तर, पात्रता और परिस्थिति का तनिक भी ध्यान नहीं रखता है।

दृष्टि और समष्टि में शांति कैसे स्थापित हो, इसके संबंध में हमारे पूर्वज ऋषि-मुनियों ने दूरदर्शिता से खूब विचार आज से हजारों वर्षों पूर्व ही कर लिया था।

व्यक्ति से परिवार, परिवार से समाज, समाज से राष्ट्र एवं राष्ट्रों के सम्मिलन अखिल विश्व की भावना रूप लेती है। विश्व एक नीड़वत है, इसके हम पक्षी के समान घोंसले में रहने वाले हैं। जब हम आये थे, तब विश्व कुछ अच्छा था। पर अब यहां से जाने के पूर्व इसे कुछ और अच्छा बना जावें। इसके लिए धर्म और पतंजलि के योग-दर्शन की बहुत आवश्यकता है।

क्या इस यज्ञ के याज्ञिक हम बनने का प्रयास करेंगे?

हमारे शास्त्रों ने कुछ 'मानक' स्थिर किये हैं। शास्त्रों के अन्तर्गत वेद, दर्शन, उपनिषद्, गीता, मनुस्मृति तथा सामाजिक दर्शन से सम्बन्धित वाल्मीकि रामायण, महाभारत, तुलसीकृत रामचरित मानस तथा सत्यार्थप्रकाश आदि उत्कृष्ट ग्रन्थों को मान्य किया है। इन सभी शास्त्रों, धर्मशास्त्रों में जिस 'मानक' की चर्चा की है, गहराई से चिन्तन किया है तथा दार्शनिक तत्त्व खोज निकाले हैं, उनमें प्रसंगवश मनुस्मृति में प्रतिपादित धर्म की परिभाषा अत्यन्त महत्वपूर्ण और विचारणीय है। धर्म के इन दस लक्षणों पर विचार करने के पूर्व प्रसंगवश एक रोचकीय शास्त्रार्थ के अवसर पर घटी एक घटना है।

काशी नगरी में विश्वविख्यात एक महान शास्त्रार्थ कार्तिक शुक्ला द्वादशी 1926 वि. अर्थात् 16 नवम्बर 1869 को हुआ। डॉ. भवानीलाल भारतीय के मतानुसार-दयानन्द ने एक प्रश्न के उत्तर अपने शिष्य पं. बलदेवप्रसाद शुक्ल को दिया था-"डर क्या है? एक ईश्वर है, एक मैं हूं, एक धर्म है और कौन है? सत्य का सूर्य प्रबल अज्ञान और अविद्या के अन्धकार पर अकेला ही विजय होता है। जो पक्षपातरहित कर सत्य का उपदेश करता है, वह किसी से भयभीत क्यों होने लगा?" (पृष्ठ 141, काशी शास्त्रार्थ, नव जागरण के पुरोधा : दयानन्द सरस्वती : लेखक-डॉ. भवानीलाल भारतीय) इस इतिहास प्रसिद्ध शास्त्रार्थ में महर्षि दयानन्द ने अपने प्रतिपक्षी विद्वानों से एक प्रश्न पूछ लिया। यह प्रश्न बहुत ही असम्भावित और आश्चर्यपूर्ण था। प्रतिपक्षी पंडितों से चर्चा कर वे उनकी ज्ञान-गरिमा और ज्ञान-गहराई समझ गये थे। उन्होंने बालशास्त्री से एकाएक पूछ लिया-अधर्म के क्या लक्षण हैं? यह प्रश्न सुनते ही विपक्षियों के पैरों से जमीन खिसक गई, वे बेहाल हो गये। मेरी सम्मति में धार्मिक शास्त्रार्थों में, सम्भवतः विश्व में, यह प्रथम घटना थी कि जिसमें वेदों के प्रकाण्ड सूर्य दयानन्द ने विपक्षी की कमजोर नस पर हाथ रखकर इस प्रश्न के द्वारा उन्हे चारों खाने चित्तर कर दिया था। प्रतिपक्ष्जी एक दूसरे का मुंह नोचने लगे। किसी ने भी यह नहीं सोचा था कि यह औघट संन्यासी शास्त्रार्थ में 'अधर्म' की परिभाषा पूछा लेगा। परिणाम यही हुआ कि प्रतिपक्ष बौखलाकर विषयान्तर पर उतारू होगा, परन्तु अधर्म की परिभाषा का उल्लेख न कर सका। विपक्ष के पराजित होने का मुख्य कारण यह था कि महर्षि दयानन्द जहां ईश्वर, धर्म और सत्य को आधार बनाकर शास्त्रार्थ-संग्राम में कूदे थे, वहां विपक्षी अपने अन्नदाता काशी नरेश ईश्वरसिंह, असत्य और असत्य को अपनी ढाल बनाकर वाक्शूरता का परिचय दे रहे थे। ऐसे में सत्य-सनातन, ईश्वर-निष्ठ योद्धा की विजय होनी ही थी। सम्प्रति, विश्व को मनुस्मृति की परिभाषा-

घृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रिय निग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधोदशकं धर्म लक्षणम्।।

इन 90 तत्वों की परम आवश्यकता है। महर्षि दयानन्द ने 'अहिंसा' पद संयुक्त इसकी परिभाषा में और भी अलौकिकता उत्पन्न कर दी है। ये सारे तत्व सार्वकालिक सार्वभौमिक शाश्वत और धवल-अमल हैं। इन्हें विश्व के किसी भी भाग में रहने वाले सरलता से अपना कर अपना मानव जीवन सार्थक कर सकते हैं।

यदि किसी वर्ग या प्रदेश के निवासियों को मनुस्मृति द्वारा प्रतिपादित परिभाषा जटिल लगती हो तो वह वैशेषिक दर्शन के इस सूत्र को आसानी से ग्रहण कर सकती है। धर्म क्या है? इसे समझते हुए महर्षि कणाद ने वैशेषिक दर्शन के दूसरे सूत्र में स्पष्ट कहा है-"**यतोऽभ्युदय निः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः।**" अर्थात् जिस आचरण से सांसारिक सुख और आध्यात्मिक आनन्द अर्थात् मोक्ष दोनों की प्राप्ति हो, वह धर्म है। खेल सांसारिक सुख भोगी अथवा केवल आध्यात्मिक आनन्द के इच्छुक मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। ये दोनों ही सापेक्ष हैं। विद्या-अविद्या, प्रेय-श्रेय, लौकिक- इहलौकिक आदि तत्व सापेक्ष हैं। एक ही अनुपस्थित दूसरे की प्राप्ति में दीवार बन जाती है। यदि हमारे आचार्यों का उपरोक्त सरल कथन ही विश्व मान लेता तो आप विश्व-मानवों की यह दुर्गति नहीं होती।

अन्त में एक तृतीय विकल्प भी प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जिसकी इन दिनों स्वदेश और विदेश में बड़ी चर्चा व्याप्त है। हमने अपने युवाकाल में एक गीत की यह पंक्तियां पढ़ी थीं और उन्हें हम गुनगुनाया भी करते थे-

आयेंगे खत अरब से, उनमें यह लिखा होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी, यहां हलचल मचा रहा है।।

आन्ध्र प्रदेश स्थित एक गुरुकुल का आदित्य ब्रह्मचारी आचार्य रामदेव इन दिनों अपने योग-विज्ञान द्वारा न केवल अरब अपितु विश्व के पांचों महाद्वीपाों में हलचल मचा रहा है। महर्षि पतंजलि का यह परम शिष्य केवल एक ही बात सबको कहता है-यदि

सांसारिक और पारलौकिक आनन्द तथा मोक्ष प्राप्त करना चाहते हो तो महर्षि पतंजलि के केवल इस सूत्र को अपना लो, तुम्हारा उद्धार हो जायेगा और वह सूत्र है....

यम-नियम का जीवन : प्रथम (समष्टि गत नैतिक जीवन)-
तत्राहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहायमाः॥ योगदर्शन -2-30

समष्टिगत, सामाजिक अनुशासन द्वारा उन्नति हेतु पांच यम हैं :-(1) **अहिंसा**-मन-वचन-कर्म से किसी को पीड़ा न देना। (2) **सत्य**-मन-वचन-कर्म से सच्चाई का आचरण करना। (3) **अस्तेय**-बिना अनुमति किसी की वस्तु नहीं अपनाना, जिसमें अपना श्रम-धन नहीं लगा, उसे नहीं लेना।

(4) **ब्रह्मचर्य**-मन-वचन-कर्म से इन्द्रिय संयम (काम) के साथ वेद-ब्रह्म संबंधी आचरण, अश्लील, अभद्र व्यवहार नहीं करना।

(5) **अपरिग्रह**-अति संग्रह से बचना। किसी भी वस्तु का दुरुपयोग न करना।

उपरोक्त पांचों यम विश्व के सम्पूर्ण राष्ट्रों के निवासी यदि अपना लें तो न विश्व-युद्ध हो सकता है और न हिरोशिमा-नागासाकी जैसा बम-काण्ड।

व्यक्तिगत अनुशासन एवं उन्नति हेतु पांच निमय-
शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः॥
(योगदर्शन 2-32)

(1) **शौच (स्वच्छता)**-शरीर, वस्त्र, स्थान, पात्रादि स्वच्छ और पवित्र रखना। कहा गया है-पहला सुख निरोगी काया। (2) **सन्तोष**-तत्परता, पूर्ण परिश्रम-पुरुषार्थ से किये कर्म का फल (पारिश्रमिक) जो मिले, उससे अधिक लोभ न करना। साध्य और साधन में पवित्रता होना अनिवार्य है। (3) **तप**-अपने कर्तव्य पालन में कष्ट सहना। ***'सहोऽसि सहो मयि देहि'*** प्रत्येक प्रकार की स्थिति में स्थित-प्रज्ञ (ज्यों का त्यों) बने रहना। (4) **स्वाध्याय**-अपने व्यक्तिगत आचरण और गुण-दोषों पर विचार करना। अपनी कमियों को दूर करना। **ओ३म् तनूपा अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि.... अग्ने यन्मे ऊन तन्मे आपृण** (यजु. 3-17)। ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ की समाप्ति के पश्चात् आत्मोन्नति हेतु ईश्वर, जीव, प्रकृति, कर्म, मोक्ष प्रधान ग्रंथों का नियमित अध्ययन। वेद, दर्शन, उपनिषद, मनुस्मृति, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार - विधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला तथा सन्तानों को 'व्यवहारभानुः' पुस्तक अवश्य पढ़वाना। स्वाध्याय से बढ़कर और कोई अन्य साधन श्रेष्ठ नहीं हैं। (5) **ईश्वर प्रणिधान**-अहर्निशम् परमात्मा-चिन्तन अर्थात् ईश्वर ध्यान सहित शुभ ही शुभ कम्र करना। परमात्मा को सर्वत्र, नित्य और घृष्टा मानकर, उसे साक्ष्य मानकर अशुभ-वचन-कर्म से दूर रहना ही ईश्वर प्रणिधान है।

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग-योग का वर्णन इस प्रकार किया है-यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा समाधि। सम्प्रति स्वामी रामदेव जी द्वारा मना करने पर भी कतिपय तत्व योग की सशुल्क दुकानें खोलकर आासन से सम्बन्धित केवल व्यायाम ही सिखा रहे हैं। यदि इसके पूर्व योग के प्रथम 2 सोपान यम और नियम की शिक्षा दीक्षा देना प्रारम्भ कर दी जाय, तो सामाजिक समरसता और सामाजिक शांति स्थापित हो सकती है। परन्तु कथित योगाचार्यों को 'क्रीमी लेयर' समाप्त होने की आशंका है। इस कारण वे स्वयं यम-नियम, के शिक्षण-प्रशिक्षण से दूर रहकर अर्थ के माध्यम से 'यज्ञ एण्ड थ्रो' की संस्कृति के प्रचार में संलग्न हैं। **धियो यो नः प्रचोदयात्** भगवान इन्हें सद्बुद्धि दें।

अन्ततः यही उचित होगा कि हम धर्म तथा योग के मूल तत्वों को हृदयंगम का मानव-कल्याण में मन-वचन और कर्म से सन्निहित होने का दृढ़ संकल्प लें। इत्योम्।

'सुकिरण', अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर-४५२००१ (म. प्र.)

एक प्रेरणा

परिवार के एक बालक को गुरुकुल में पढ़ाएं अथवा गुरुकुल के एक ब्रह्मचारी का वार्षिक व्यय देवें

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टंकारा, जहां इस समय 250 ब्रह्मचारी अध्ययनरत हैं, जिन्हें वैदिक मान्यताओं के प्रचार एवं कर्मकाण्डीय संस्कारों हेतु तैयार किया जाता है। आज विश्व में कई ऐसी आर्यसमाजें हैं जहां इस उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारी प्रचार कर रहे हैं, जिनमें ग्रेट ब्रिटेन, अमेरिका, गुआना, साउथ अफ्रीका, मॉरीशस, फीजी आदि देश प्रमुख हैं।

पाश्चात्य सभ्यता को मुंहतोड़ उत्तर देने के लिए यह आवश्यक है कि सुयोग्य धर्माचार्यों की संख्या अधिक से अधिक हो और हमारा युवा वर्ग इनके संदर्भ में आवे और वह अपनी मूल सभ्यता से जुड़े। आप सभी दानी महानुभावों से प्रार्थना है कि अपनी आने वाली पीढ़ी को वैदिक संस्कारों से ओत-प्रोत करने हेतु इन ब्रह्मचारियों के एक वर्ष के अध्ययन का व्यय दान स्वरूप ट्रस्ट को दें। यह ऋषि ऋण से उऋण होने में आपकी आहुति होगी।

एक ब्रह्मचारी का एक वर्ष का अध्ययन/वस्त्र/खानपान का व्यय 12,000/- रुपये है।

आपसे प्रार्थना है कि अपनी ओर से अथवा अपनी संस्थाओं की ओर से कम से कम एक ब्रह्मचारी के अध्ययन व्यय की सहयोग राशि **'श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा'** के नाम चैक/ ड्राफ्ट केवल खाते में दिल्ली कार्यालय के पते पर भिजवाकर पुण्यार्जन करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

-: निवेदक :-

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

अनुव्रतः पितु पुत्रो-पुत्र पिता के अनुव्रती हो

❐ स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

अथर्ववेद के मन्त्र का यह एक चतुर्थांशी है आर्य समाज के उपदेशक अपने प्रवचनो में प्रायः उपदेश देते हुए इस वाक्य से समझाते हैं कि हमारा परिवार वैदिक परम्पराओं से युक्त हो पुत्र पिता के अनुव्रती हो। उनकी आज्ञा का पालन करने वाले हो। माता के द्वारा मन को नियन्त्रण करने का उपदेश हो वह सबके मन की बात समझकर उनके खान-पान एवं स्वास्थ्य का ध्यान करें। पत्नी अपने पति देव के प्रति मधुर भाषिणी हो परिवार को कल्याणकारी वाणी द्वारा सुन्दर स्वरूप तैयार किया जाये ऐसा हमारा परिवार होगा उसे ही वैदिक परिवार अथवा आदर्श परिवार कहा जायेगा उसके ही साथ कुछ मन्त्र हैं जो भाई-भाई में स्नेह, आत्मीयता, भ्रातृत्व की भावना का उपेदश है बहिन के लिए भी ऐसा ही सन्देश है। अथर्ववेद में ऐसे सुन्दर परिवार बनाने के लिए प्रत्येक भाई के लिए प्रत्येक बहिन के लिए प्रत्येक पति-पत्नी के लिए एवं प्रत्येक पिता पुत्र के लिए यह सन्देश है किसी के साथ कोई भेदभाव अथवा पक्षपात की भावना देश काल के आधार पर नहीं गरीबी-अमीरी या जात-बिरादरी विशेष के लिए नहीं वर्तमान में किसी राजनैतिक पार्टी सपा, बसपा, भाजपा, कांग्रेस की भी बात नहीं, ठाकरे ही तरह कोई प्रान्तवाद भी नहीं है सभी मानव मात्र को यह सन्देश है आजकल गुरुडम चल रहे हैं धर्म के नाम पर कई प्रकार के पन्थ-सम्प्रदाय मजहब चल रहे हैं उनमें भी किसी से भेदभाव नहीं है सभी पन्थ और सम्प्रदाय इस बात को स्वीकार करते हैं और वे भी इसी प्रकार का अपना परिवार बनाना चाहते हैं क्योंकि यह वाणी वेद वाणी है जो परमात्मा प्रदत्त है इस ज्ञान सागर में जो भी गोता लगायेगा वही सुखी जीवन जीने का अधिकारी बनेगा। आवश्यकता इस बात की है कि आप किसी भी माध्यम से अपने मन को शिव संकल्प के साथ तैयार करें अपनी मानसिक चेतना को परिवार के प्रति समर्पित करें। अपने लक्ष्य को निर्धारित करें अपने ऊपर भी आपको पूर्ण नियन्त्रण करना होगा। मनसा, वाचा, कर्मण उसे व्यवहार में उतारने के लिए तपश्चर्या करनी होगी। आत्मचिन्तन के द्वारा अपना आत्मनिरीक्षण भी करना होगा। प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त्त में जैसा कि मनुस्मृति में आया है-ब्राह्ममुहूर्त्ते बुध्यते धर्मार्थो चानुचिन्तये्। कायक्लेशांच तन्मूलान् वेदतत्त्वार्थमेव च।।

प्रातःकाल ब्रह्ममुहूर्त्त में उठकर आप अपना आत्म निरीक्षण प्रारम्भ करें कि मेरे जीवन में क्या न्यूनता रह गई है जो परिवार अभी मेरे अनुकूल नहीं हो पा रहा है मुझे क्रोध, आलस्य, प्रमाद जैसे दुर्गुणों ने अपना दास तो नहीं बना लिया है स्वास्थ्य ठीक है फिर दिनचर्या में धार्मिक वातावरण तैयार करने के लिए स्वयं कितना समय दे पा रहा हूँ आर्थिक स्थिति के लिए कितने समय और पुरुषार्थ की अपेक्षा है उसे पूरा करने के लिए किन-किन साधनों की अपेक्षा है उसे पूरा करने के पश्चात संस्कार और शिक्षा के लिए कैसा प्रयास चल रहा है? वह आपके सामर्थ्य के अनुसार होना अपेक्षित है यदि न्यून है तो उसे बढ़ाने का प्रयास करना है यदि बढ़ा हुआ है तो उसके नैरन्तर्य की आवश्यकता है यदि प्रतिदिन निरन्तरता नहीं है तो भी परिणाम आशाजनक नहीं मिलेगा। जैसे परीक्षाकाल में छात्र परीक्षा की तैयारी करता है याद किया हुआ पाठ पुनः स्मरण करता है जो याद नहीं है उसे स्मरण करता है प्रतिदिन के अभ्यास से छात्र निश्चिन्त होकर परीक्षा में निर्भय रहता है और अच्छे अंक प्राप्त करके स्वयं प्रसन्न होता है तथा परिवार के सदस्यों एवं अपने गुरुजनों को भी प्रसन्न करता है। इसी प्रकार वह व्यक्ति जो अपने परिवार को अपने अनुकूल परम्परा से रखना चाहता है उसके लिए भी इतनी ही तन्मयता, सावधानी, समर्पण एवं प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है।

प्रायः हमारी सभी की भावना तो रहती हैं कि मेरा परिवार अच्छा हो, बच्चे आज्ञाकारी हों, हमारी श्रीमती मधुर भाषिणी हो, अन्य जो विशेषतायें ऊपर कहीं है वे सब प्राप्त हो, उसके लिए प्रयास कितना करना हैं, कैसे करना है? व्यवहारिक रूप में जबतक आचरण नहीं करेंगे तब तक हम उसका पूरा लाभ नहीं उठा सकेंगे। वेद की शिक्षा के प्रति विश्वास भी तभी प्राप्त कर सकेंगे।

विश्वास के पश्चात् ही उसमें श्रद्धा-आस्था हो पाती है तभी वह उत्साहित होकर निष्ठा से कार्य करता है। प्रत्येक व्यक्ति परिणाम चाहता है पुरुषार्थ करना नहीं चाहता इसलिए आज हमारे परिवार टूटते जा रहे हैं पुरानी पीढ़ी के लोग सामूहिक परिवारों में रहकर उन्नति करते थे सभी प्रसन्न एवं निश्चिन्त रहते हुए अपने पुत्रों का चरित्र निर्माण करके अपने पितृ ऋण से मुक्त होने का प्रयास चलता रहता था। आज हमारी यह पुरातन परम्परा का लोप हो रहा है जिसका दुष्परिणाम आपके समक्ष है। अतः वैदिक परम्परा किसी न किसी रूप में ग्रामों सुरक्षित थी आज पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव नगरों से ग्रामों की ओर भी प्रभावी हो गया है आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों की ओर लोटो का नारा देकर यही बताने का प्रयास किया था कि वेद सृष्टि के आदि में परमात्मा ने ऋषियों के माध्यम से जो ज्ञान दिया है वह मानव मात्र के कल्याण के लिए है उसमें हम किसी भी वर्गवाद में आकर यदि इस मार्ग से द्वेष करते हैं तो स्वयं अपनी ही हानि है। मानवता का हनन है आसुरी वृत्तियों का जन्म हो जायेगा और आपके परिवार में राक्षस जन्म लेकर पूरे घर को लंका जैसा वातावरण बना देंगे। हमें अयोध्या जैसा वातावरण बनाना है जहां राम-लक्ष्मण का स्नेह और राम जैसा त्याग समर्पण दिखाई देगा। माता कौशल्या के संस्कार परिवार में रामराज्य लाने में सहयोगी बनेंगे। हमारी भी इच्छा ऐसे अच्छे परिवार को प्राप्त करने की रहती है उसके लिए केन्द्रबिन्दु वैदिक परम्परा से ही जुड़ना होगा। इसके अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग नहीं है। ''नान्यः पन्था विद्यतेडयनाय'' अतः स्वयं को सुखी बनाने के लिए वेदानुकूल जीवन जीने का संकल्प लें।

उदाहरण के रूप में आपको विदित कराना चाहता हूं कि 1860 से लेकर 2000 तक एक समय ऐसा आया कि आर्य समाज शताब्दी एवं आर्य महासम्मेलन देशभर में बड़े रूप में आयोजित होने लगे उस अवसर पर यदि शोभायात्रा निकलती थी तो उसके संयोजक श्री रामनाथ जी सहगल आर्य युवा नेता हुआ करते थे। शोभायात्रा की व्यवस्था पूर्व अनुशासन में रहती थी और अन्त में उसकी सफलता का श्रेय मान्य सहगल जी को ही जाता था। इनके व्रत का अनुपालन करने के लिए अपने सुपुत्र श्री अजय सहगल जी को तैयार किया। संस्कार दिये वातावरण बल का उन्हें मानसिक रूप से तैयार किया वे भी आधुनिक आर्य पुत्रों की तरह अपनी नई दुनियाँ में रहते हुए परिवार पोषण में संलग्न हो सकते थे लेकिन अपने पिता जी के प्रत्येक कार्य में उनका

(शेष पृष्ठ 22 पर)

जीवात्मा सत् स्वच्छ चित्त वाला है

❐ श्री हरिश्चन्द्र वर्मा वैदिक

मस्तिष्क शास्त्र (PNRENOLOGY)का जन्म दाता गॉला लिखता है कि मेरी राय में एक ही निरवमव वस्तु है-जो देखती, सुनती, स्पर्श करती और प्रेम विचार तथा स्मरण आदि करती है पर यह अपने कार्य के लिए मस्तिष्क में अनेक भौतिक साधन चाहती है। इसने वही बात कह दी जो ''प्रश्नो पनिषद के ऋषि ने कही है-

एष ही द्रष्टा स्प्रष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा विज्ञानात्मा पुरुषः।' निश्चय ही-यह देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, सुघने वाला, चखने वाला, मनन करने वाला, जानने वाला, कर्म करने वाला, ज्ञान करने वाला आत्मा है।

'ऋषि दयानन्द' सत्यार्थ प्रकाश' के नवम् समुल्लास में लिखे हैं कि-'जो कोई ऐसा कहे कि जीव अर्थात आत्माकर्त्ता, भोक्ता नहीं तो उसको जानो वह अज्ञानी, अविवेकी है क्योंकि बिना आत्मा ये सब (इन्द्रियादि उपकरण) जड़ पदार्थ हैं, उनको सुख-दुःख का भोग व पाप पुण्य का कर्त्तव्य कभी नहीं हो सकता है। हाँ इनके (मन, बुद्धि, इन्द्रिया आदि के) समन्ध से, आत्मा पाप-पुण्यों का कर्ता और सुख-दुःखों का भोक्ता है।''

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि सृष्टि में मनुष्य का आना, मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मो के कारण हुआ है। यदि उसके अच्छे कर्म अधिक है तो मनुष्य बन गया है। यदि बुरे कर्म अधिक हैं तो पशु-पक्षी हो जाता है। अच्छे-बुरे कर्मो का भोग मुझे सुख और दुःख रूप में प्रभु की व्यवस्था से मिलता है और यह भी निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य प्रत्येक विपाक की अर्थात् सुख-दुःख रूपी कर्म फल की किन्हीं साधनों द्वारा प्राप्त करता है। किसी प्राणी को यदि कर्म का विपाक प्राप्त होता है तो उसे सबसे पहले उस विपाक को प्राप्त करने के लिए शरीर रूपी साधन की आवश्यकता होती है।

इस शरीर के द्वारा हि सुख और दुःख भोग सकता है और प्राप्त कर सकता है। कोई सुख और दुःख इस संसार में किसी भी प्राणी को बिना किसी के प्राप्त हो यह असम्भव है। मनुष्य को तीन साधनों से सुख-दुःख प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक, आधि भौतिक, आधिदैविक। इन तीनों प्रकार के सुखो और दुःखो को प्राप्त करने और भोगने के लिए मनुष्य के पास ज्ञानेन्द्रियां और कर्मेन्द्रियां, मन और बुद्धि अपने कर्मो के विपाक प्राप्त करने, भविष्य के लिए कर्म करने और पूर्वजन्म के कर्मो के फल भोगने के लिए साधन रूप दिये हैं।

लेख का शीर्षक है-जीवात्मा सत्=स्वच्छ चितवाला है' जैसे सफेद शीशे का गिलास आत्मा का सूक्ष्म शरीर है और उसमें जो स्वच्छ जल है वह आत्मा के समान है। जब कर्म का सूक्ष्म फल संस्कार का रंग जिस प्रकार का गिलास पर पड़ता है तो वह जल रूपी आत्मा उसी प्रकार का दिखता है। सूक्ष्म शरीर का गठन (मुख्य प्राण से) पांच प्राण, पांच सूक्ष्म भूत (से) पांच ज्ञानेन्द्रियां, मन तथा बुद्धि से युक्त सतरह तत्वों के समुप्दाय को परमात्मा ने आत्मा के लिए इसलिए रचना की ताकि उनसे स्थूल शरीर बने और उन्हीं के माध्यम से आत्मा अपने संस्कार स्वभाव के अनुसार कर्मो को करे और उसी के अनुसार सुख-दुःखों के भोग का बोध करे। अतः मानव कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है उसका सूक्ष्म फल संस्कार रूप में आत्मा के सूक्ष्म शरीर (के अन्तर्गत जो मन और बुद्धि है उस) पर पड़ता रहता है।

तात्पर्य यह कि सारे स्त्री-पुरुष के स्वभाव, मनोवृत्ति, विचार और अगूंठे के चिन्ह एक जैसे नहीं होते किन्तु उन सबकी आत्मा अर्थात् जीवन शक्ति एक ही प्रकार की है, केवल कर्मानुसार सूक्ष्म शरीर पर संस्कार के पड़ने से आत्मा विभिन्न स्वभावों वाला दिखता है।

यदि कोई अधिक हिंसक स्वभाव वाला बन गया है, बलात्कारी और भ्रूण हत्याकारी है तो वह स्वयं किसी हिंसक योनि में चला जाता है। जैसे शराबी, शराबी के पास जाना पसन्द करता है, वैसा ही योनि का विषय है। कर्म समाप्त हो जाता है किन्तु उसकी वासना रूपी संस्कार शेष रह जाता है। यह जीवात्मा का चित अर्थात् सूक्ष्म शरीर अनगिनत वासनाओं से चित्रित है।

प्रश्नोपनिषद में इन विषयों पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला गया है-'प्राण के सम्बन्ध में कैशल्य ने 6 प्रश्न किये थे जिनमे एक दो प्रश्न यह था कि 1-प्राण कहां से उत्पन्न होता है? और 2- इस शरीर में कैसे आता है? मन्त्र निम्न प्रकार है-

आत्मनः एष प्राणो जायते! यथैषा पुरुषे छायैतस्मिन्नते दाततं मनोधिकृतेनाऽऽ यात्सस्मिन शरीरे!! व्याख्या प्राण सूक्ष्म शरीर का एक अंग है। सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा स्थूल शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है। इसीलिए इस स्थूल शरीर में प्राण की उत्पत्ति का निमित्त आत्मा को बतलाया गया है। प्राण शरीर के देश विशेष में नहीं रहता किन्तु सारे शरीर में, छायावत फैला रहता है। ''मनोधिकृत'' नाम वासना का है-कर्म से वासना की उत्पत्ति होती है, यह वासना ही जन्म का कारण हुआ करती है। यह वासना उत्पन्न उन्हीं कर्मो से होती है जो फल की इच्छा से (सकाम) किये जाते हैं। इसी वासना से जीव, सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल को जन्म के द्वारा प्राप्त किया करता है।

प्रश्नोपनिषद् के अनुसार-गर्भ में गर्भ की स्थापना का कारण प्राण है यदि रज और वीर्य के साथ आत्मा के सूक्ष्म शरीर का प्राण न मिले तो गर्भ की स्थापना नहीं हो सकती। अतः उसीसे गर्भ (मे शिशु) की वृद्धि होती है।

जीवात्मा क्या है-प्रिंसिपल दीवानचन्द जी एम.ए. के शब्दों में-''आत्मामिश्रित पदार्थ नहीं, इसलिए इसके विच्छेद का प्रश्न ही नहीं उठता। आत्मा अमिश्रित द्रव्य है, इसलिए अमर है।'' कठोपनिषद के चौथे मन्त्र में लिखा है-''आत्मान्द्रियमनोयुक्त भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः।।4।। अर्थात्-कर्मो का कर्त्ता और भोक्ता कौन है? इसका बड़ा उत्तम निर्णय किया है। उपनिषद ने स्थिर किया है कि आत्मा, मन और इन्द्रियां में तीनों ही मिलकर कर्ता और भोक्ता है।''

महात्मा आनन्द स्वामी के शब्दों में-''यह जीवन सत्-चित्त' जगत् के भोग भोगने और दुःखो की अत्यन्त निवृत्ति करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए मानव शरीर के साथ इसका सम्बन्ध होता है।''

जीवात्मा वह अणुशक्ति है, जिसमें ज्ञान करने, कर्म करने और भोग करने का गुण बीज रूप में विद्यमान रहता है। स्त्री के अन्दर गर्भाशय की क्रिया-मासिक धर्म के पश्चात् उसमें उत्पन्न होकर 28 दिन रहने और पलने के पश्चात एक नाली से होकर गर्भाशय तक चले जाते

हैं, जहां कुछ दिन तक ठहरे रहते हैं। स्त्री में ये अंडे ऐसी छोटी–छोटी आकृति के होते हैं कि यदि 280 अंडे मिलाकर रखे जायं तो लगभग एक इंच लम्बा स्थान घेरता है। साधारण तथा प्रतिमास अंडा गर्भाशय में मासिक धर्म के दिनों आता है, यदि यहां कुछ दिनों में जब पुरुष के शरीर से, स्त्री के शरीर में वीर्य प्रवेशकर जाता है तब उसमें लाखों वीर्याणु क्रियाशील हो जाते हैं जिनमें केवल प्राण की क्रिया होती है और उनमें से जिनका सूक्ष्म शरीर से सम्बन्ध हो जाता है, वही भाग्यशाली गर्भ के रज अप्रदानी में प्रवेश कर पाता है और गर्भ ठहर जाता है। शेष वीर्याणु नष्ट हो जाते हैं। उसके पश्चात उस सूक्ष्म भ्रूण में सूक्ष्म शरीर के प्राण द्वारा उसमें गति और माता से रस रक्तादि को नाभि से कमल नल द्वारा प्राप्त कर उससे उसका सर्वाण बनने की क्रिया आरम्भ हो जाती है। जब ईश्वरीय नियम द्वारा आत्मा से युक्त सूक्ष्म शरीर के प्राणादि द्वारा शिशु का नौ मास में सारे अंग पुष्ट हो जाते हैं, तब ठीक निर्धारित समय में उसी के नियम द्वारा गर्भ से बाहर शिशु का जन्म हो जाता है।

हम लोगों के शरीर में परमात्मा ने जो तीन अवस्था प्रदान की है, वह जन्म और मृत्यु का एक छोटा सा उदाहरण है, यथा–सुषुप्ति अवस्था मृत्यु का। गर्भ में आना, स्वप्नावस्था और जन्म लेना जागृतावस्था का चिन्ह है। जैसे सूर्योदय के समय उसमें लाली होती है, वैसे ही जन्म के बाद और नींद से जागने पर ज्ञानतन्तु अच्छादित रहता है फिर धीरे–धीरे सूर्य जैसे ज्ञानोदय में तीव्रता होने लगती है। प्राण शक्ति तीन प्रकार की है–एक वह प्राण है जो पंचतत्वों में व्याप्त है। दूसरा उससे सूक्ष्म वह है जो सूक्ष्म शरीर में है और तीसरा सबसे सूक्ष्म प्राणशक्ति वह है जो ईश्वर का सामर्थ के रूप में सर्वत्र मौजूद है। (इसे आप ऊर्जा भी कह सकते हैं)

अन्तरिक्ष में अणु–परमाणुओं का आवागमन करना/अग्नि जलना/वायु का बहना/जल का भिगोना और पृथिवी का धारणा करना। इस प्रकार उनमें भिन्न–भिन्न रूपों में भौतिक प्राण कि क्रिया हो रही है। वृक्ष वनस्पतियों का हरा भरा रहना, फूलना–फलना आदि पंचतत्वों के माध्यम से उन सबमें भी प्राण की ही क्रिया हो रही है। केवल शरीरधारी प्राणी ही ऐसे है जिनमें आत्मा के संयोग से ज्ञातत्वगुण पाया जाता है। पुनश्च इसी प्रकार वीर्य जब शरीर से बाहर निकल जाता है तब उसमें प्राण की क्रिया सूक्ष्म रूप से होने लगती है (जो दृष्टिगोचर नहीं होता) और जब स्त्री के शरीर में रज के अणु से उसका सम्पर्क हो जाता है तो आत्मा के संयोग से गर्भ की स्थापना हो जाती है।

पुरुष के शरीर में वीर्य ओज के रूप में विद्यमान रहता है, उसे युवक लोग व्यर्थ कर नष्ट न करें। काम वासना, उत्तेजना अंधा बना देता है, स्वप्न दोष न होने दें, इससे नपुसंकात का रोग हो सकता है। इसीलिए कहा गया है कि ‘बचपन है जिनका सुधरा, जीवन बना उसी का।’

प्रश्न–कौन सोता है और कौन जगता है? उत्तर–आत्मा और प्राण ये दोनों नहीं सोते, केवल आत्मा के सम्बन्ध से मन और बुद्धि ही निद्रावस्था में आ जाते हैं। जब तक शरीर में आत्मा रहता है तब तक मन और बुद्धि में जड नहीं होता, ये दोनों ही अपना कार्य करते रहते हैं। प्रश्न–यदि शरीर के अन्दर की क्रिया क्यों नहीं होती? उत्तर मेरा प्राण का कार्य प्राण करता है और मन का कार्य मन करता है। अतः शरीर के अन्दर रूनी उपकरणों को सक्रिय रखना प्राण का धर्म है (जिसका कभी उपकरण किडनी आदि को विज्ञान नहीं बना सकता) और मेरा कर्म है, शरीर के इन्द्रियों द्वारा कर्म करना और उन्हीं साधनों द्वारा दुःखों के फलों को भोगना।

प्रश्न–मानव कर्मानुसार उसे उसका स्थूल फल आर्थिक तो मिल जाता है, पर उसके भले बुरे का सूक्ष्म फल रूप संस्कार उसके आत्मा से सम्बन्धित सूक्ष्म शरीर पर पड़ता रहता है, मृत्यु के पश्चात् जीवन में किया कराया उसका अंतिम संस्कार अर्थात वासना वही उसके साथ जाता है और वही उसके अनुसार किसी योनि में जन्म का कारण बनता है, यह सब कहावत सत्य है? उत्तर देखिये जब किसी रोग दुर्घटना अथवा किसी के मार देने से–शरीर के उपकरण नष्ट हो जाते हैं, तब शरीर से आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर का वियोग हो जाता है अर्थात मृतक का प्राण प्राणातत्व में चला जाता है, मरने वाला को कुछ भी पता नहीं, वह सर्वदा के लिए अज्ञान हो जाता है, एक झटके में सवगति बन्द, शरीर शीतल हो जाता है, क्योंकि शरीर में जो गर्मी भी वह सूक्ष्म शरीर से थी और हृदय में जो गति थी वह भी सूक्ष्म शरीर के प्राण से थी, जब सूक्ष्म शरीर ही नहीं रहा तो स्थूल शरीर भी नहीं रहा। अतः आत्मा के न रहने से यह अपवित्र हो गया। तात्पर्य यह कि जल मृतक का प्राण प्राणतत्व में चला जाता है तब उस प्राण (अर्थात सूक्ष्म शरीर) पर जो पूर्वका संस्कार भला, बुरा का पड़ा होता है, क्या- होता है। किसी को कुछ पता नहीं किन्तु एक उदाहरण से इतना समझ में आ जाता है कि गर्भ में गर्भ की स्थापना प्राण के द्वारा ही होती है और जन्म के पश्चात जब शिशु सोता है तो अर्धनिद्रा में अपने पूर्व के सुखद या दुःखद घटनाओं के कारण ही वह रोने और हंसने जैसा हरकत करता है। ऐसा होना लड़का धर्म नहीं है जो न स्वाभाविक है, ऐसा रोना हंसना उसके पूर्व का संस्कार ही कारण है। देखिये जब अग्नि की भट्टी से लोहा निकलता है तब लाल रहता है, फिर धीर–धीरे जैसे वह काला हो जाता है–वैसे ही उसका पूर्व का स्मरण अथवा दृश्य धीरे–धीरे अदृश्य हो जाता है।

– मु.पो. मुरारई, जिला–वीरभूम (पं. बंगाल), मो. 8158078011

टंकारा समाचार
के प्रसार में सहयोग दें

‘टंकारा समाचार’ उलट–पलटकर रख देने लायक नहीं, बल्कि गंभीरतापूर्वक पढ़ने लायक पत्रिका है। यदि आप इसे पढ़ेंगे तो हमें विश्वास है कि पसन्द भी करेंगे और चाहेंगे कि इसे और लोग भी पढ़ें। कृपया अपने जैसे गम्भीर पाठकों से ‘टंकारा समाचार’ की चर्चा करें, उन्हें इसका ग्राहक बनने के लिए प्रेरित करें।

‘टंकारा समाचार’ का वार्षिक शुल्क 100/- रूपये एवम् आजीवन शुल्क 500/- रूपये हैं।

आप उपरोक्त राशि श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर, आर्य समाज (अनारकली), मंदिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 के पते पर भिजवा कर सदस्य बन सकते हैं।

(पृष्ठ 2 का शेष)

गुरुकुल के बच्चे मन्त्रोच्चारण एवम् व्यायाम प्रदर्शन करते हुए।

अपराह्न 2 बजे से 5 बजे तक युवा उत्सव एवं पारितोषिक वितरण समारोह आयोजित किया गया। इस सत्र की अध्यक्षता स्वामी शान्तानन्द जी (भुज) द्वारा की गई। मुख्य अतिथि के रूप में श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। विशेष आमन्त्रित के रूप में साध्वी उत्तमायति जी, श्री राजीव चौधरी उपस्थित थे। इस अवसर पर सौराष्ट्र के स्कूलों एवं कालेजों के विद्यार्थियों के लिए टंकारा ट्रस्ट की ओर से बॉलीबॉल प्रतियोगिता, प्रश्नमंच, व्यायाम प्रदर्शन, उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा वर्तमान सामाजिक समस्याओं पर संदेशात्मक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। प्रतियोगियों को नकद पुरस्कार, प्रमाण पत्र व बाहर से आने वालों को किराया दिया गया। इसी अवसर पर डॉ. मुमुक्षु जी द्वारा वेद पाठ की प्रतियोगिता रखी गई जिसमें निर्णायक के रूप में डॉ विनय विद्यालंकार (अध्यक्ष, संस्कृत विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नैनीताल) थे और इस कार्यक्रम के संयोजक टंकारा ट्रस्ट के ट्रस्टी श्री हंसमुख परमार ने किया। प्रतियोगिता इतनी रोमांचकारी थी कि अन्त तक तीन प्रतियोगितयों में कौन प्रथम है इसका निर्णय निर्णायक महोदय को करना कठिन हो गया। अन्त में तीनों प्रतियोगियों को प्रथम घोषित किया गया और तीनों प्रतियोगियों को ही रूपये 5-5 हजार पुरस्कार में दिये गए। इस सत्र के अन्त में पं. रमेश चन्द्र मेहता ने ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद देते हुए अपने टंकारा प्रवास के दिनों की याद करते हुए अपने संस्मरण सुनाए।

सायंकालीन यज्ञ 5 बजे से 7 बजे तक आयोजित किया गया। प्रातः एवं सायं यज्ञ के समय कई महानुभावों को टंकारा ट्रस्ट को दिये जाने वाले अभूतपूर्व योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इस अवसर पर श्री एस के शर्मा, श्री रघुनाथ राय आर्य, श्री सुशील भाटिया, श्री विद्यारतन आर्य, श्री के सी शर्मा, श्री सी पी महाजन, श्रीमती रतनैश भैया, श्रीमती अरूणा सतीजा आदि उपस्थित थे।

वैदिक परिवार निर्माण सम्मेलन एवं भक्ति संगीत सम्मेलन रात्रि 8-30 बजे से

यजवेदी पर श्री लद्धा भाई पटेल द्वारा सम्मानित किए गए ऋषि भक्त, सर्वश्री प्रवीण भाई पटेल (पौत्र श्री डॉ. वी.एच. पटेल), श्री अरोड़ा जी, श्री रघुनाथ राय जी एवम् श्री विद्यारत्न आर्य जी

मंच से भजन प्रस्तुत करते धर्मपत्नी श्रीमती कविता आर्य के साथ श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर) एवम् साध्वी उत्तमायति। टंकारा में उपस्थित सभी सन्यासियों का स्वागत करते श्री वाचोनिधि आर्य, श्री रंजीत भाई परमार एवम् सुशील जी। आर्य कन्या पाठशाला जामनगर की छात्रायें।

टंकारा में सम्मानित श्री एस.के. शर्मा (अलीगढ़), श्री अशोक आर्य (अमरोहा), श्रीमती रतनीश भाईया जी (अलीगढ़), श्रीमती अंजु मुंजाल (पुत्रवधु), महात्मा सत्यानन्द मुंजाल, श्री वचोनिधि आर्य (गांधीधाम)

10-30 बजे तक आयोजित किया गया। इसमें जहां उपदेशक विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा ऋषि गुणगान के भजन प्रस्तुत किए गए वहीं मुख्य रूप से श्री कुलदीप शास्त्री एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सुनीता जो कि बिजनौर से विशेष रूप से पधारे थे, के भजन हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री योगेश मुंजाल जी ने की और विशेष अतिथि के रूप मे श्री लधाभाई पटेल एवं श्री अरूण अब्रोल उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. एस के शर्मा एवं डॉ. विनय विद्यालंकार के प्रभावशाली प्रवचन हुए जिनका उपस्थित महानुभावों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। इस सत्र की संयोजिका श्रीमती अरूणा सतीजा थी।

दिनांक 17 फरवरी 2015 को शिवरात्रि एवं बोधोत्सव का मुख्य कार्यक्रम रहा जिसमें प्रातः 8-30 बजे पूर्णाहुति का यज्ञ आरम्भ किया गया। इसमें मुख्य यजमान के रूप में श्रीमती एवं श्री एस के शर्मा, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री अरूण अब्रोल एवं श्री लधाभाई पटेल उपस्थित थे। सर्वप्रथम श्री एस के शर्मा जी ने ब्रह्मा जी का वरण कर उन्हें तिलक लगाया एवं साथ ही सभी वेदपाठियों का भी वरण किया तदुपरान्त अग्निधान कर यज्ञ आरम्भ किया।

पूर्णाहुति के उपरान्त श्री एस के शर्मा सभी की शुभकामनाऐं एवं आशीर्वाद ग्रहण करते हुए ध्वजस्थल पर पहुंचे। जहां ट्रस्ट के वयोवृद्ध श्री लधाभाई पटेल ने ट्रस्ट की ओर से पगड़ी पहना कर उनका स्वागत किया तदुपरान्त भारत से आए हुए लगभग 125 आर्य महानुभावों ने उन्हें फूलमाला अर्पित कर उनका सम्मान किया। भारत का कोई ऐसा प्रान्त नहीं था, जिसका प्रतिनिधित्व इस अवसर पर न हुआ हो। श्री एस के शर्मा जी द्वारा ध्वजारोहण किया गया और इस अवसर पर श्री सत्यपाल पथिक जी ने ध्वज गीत गाया।

तदुपरान्त एक विशेष मंच से ओ३म् ध्वज लहराकर शोभायात्रा का प्रारम्भ किया गया। भारत से पधारे लोगों में इतना उत्साह था कि प्रत्येक व्यक्ति अपना चित्र उनके साथ खिचवाने में लालायित था। शोभायात्रा में स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी शान्तानन्द, साध्वी उत्तमायति, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, श्री एस के शर्मा, डॉ. विनय विद्यालंकार, आचार्य रामदेव, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री पं. जगदीश चन्द्र बसु, श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, श्री हंसमुख परमार, पं. रमेश चन्द्र मेहता, श्री सत्यपाल पथिक, श्री अजय सहगल, श्री विद्यारत्न आर्य, श्री विजय सचदेवा, श्री अशोक कुमार आर्य, श्री वी पी सिंह, श्री विजय सरीन, श्रीमती अरूणा सतीजा, श्रीमती वेद साहनी, श्रीमती उषा अरोडा, श्री चन्द्र सेन गोयल, श्री सी पी महाजन, श्री राजीव चौधरी, श्री भरत प्रसाद बरनवाल आदि उपस्थित थे। लगभग 1 घंटे तक शोभायात्रा का संचालन किया गया।

अपराह्न 3 बजे से 5 बजे तक विशेष श्रद्धांजलि सभा का

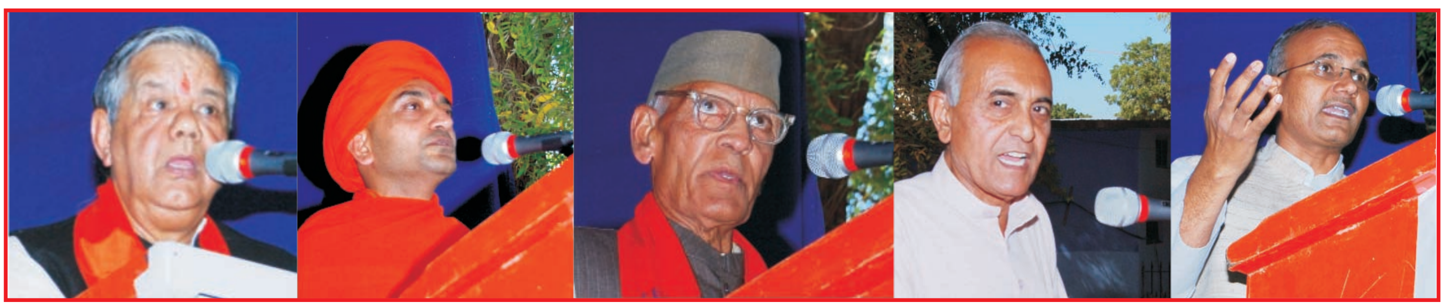

बोधोत्सव पर अपना उद्बोधन देते हुए डॉ. एस.के.शर्मा, स्वामी शान्तानन्द सरस्वती, श्री सत्यपाल जी पथिक, श्री हंसमुख परमार एवम् डॉ. विनय विद्यालंकार

श्री सत्यपाल पथिक जी की नई सी.डी. का विमोचन करते डॉ. एस.के. शर्मा एवम् दयानन्द बास्केतबॉल प्रतियोगिता की विजय टीमों को पारितोषित देते हुए डॉ. एस.के. शर्मा, वचोनिधि आर्य एवम् श्री राजीव चौधरी

टंकारा ऋषिबोधोत्सव 2015 की चित्रमय झांकी

आर्य समाज, फतेहनगर
महर्षि दयानन्द उच्च माध्यमिक विद्यालय
फतेहनगर
।। ओ३म् ।।
आर्य समाज सैक्टर 22, चण्डीगढ़
आर्य समाज शिवगंज
महर्षि दयानन्द मार्ग
शिवगंज (राजस्थान) फोन 02976-270725
गुड़गाँव (हरियाणा) की सभी आर्य समाजों की
प्रतिनिधि संस्था
आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गाँव (टंकारा यात्री)
आर्य समाज-भुज
(कच्छ) गुजरात
आर्य समाज आदर्श नगर
जयपुर-4, राजस्थान
आपका हार्दिक अभिनन्दन करता है
आर्य समाज पंखा रोड सी-ब्लाक (पंजी)
सी-3, जनक पुरी, नई दिल्ली-58.
आर्य टंकारा यात्रा समिति
लुधियाना
श्री ओंकारनाथ महिला सिलाई
प्रशिक्षण केन्द्र - टंकारा
आर्य समाज
सैक्टर 13 अर्बन एस्टेट करनाल
आपका स्वागत करता है
आर्य समाज मन्दिर
राजपुरा टाउन (पंजाब)
आर्य समाज नूर पुर
ओ३म्
आर्य समाज प्रशान्त विहार (पंजी)
ओ३म्
आर्य समाज राजाजीपुरम्
लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

ओ३म्
आर्य समाज कोटा जिला
आर्य समाज, जूनागढ
आपका हार्दिक स्वागत करता है।
आर्य समाज वेद मंदिर
વઢવાણ
આપનું
હાર્દિક સ્વાગત કરે છે.
यज्ञ कर्मकांड नहीं परन्तु कर्तव्य है।
॥ श्रमयज्ञ ॥
आर्य समाज, भुज (कच्छ), गुजरात
आर्यवीर दल - आर्य महिला संगठन
आचार्य सत्यदेव विद्यालंकार
स्मृति पुरस्कार

जन्म कक्ष

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती
टंकारा

आचार्य रामदेव जी, महामहीम राज्यपाल महोदय श्री ओम प्रकाश कोहली जी को ओ३म का स्मृति चिन्ह भेंट करते, मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से स्वामी शान्तानन्द जी को सम्मानित करते महामहीम राज्यपाल महोदय एवम् अरूण अवरोल। गुजरात की पारम्पारिक पगड़ी एवम् शॉल पहना कर सम्मानित करते श्री वाचोनिधि आर्य एवम् डॉ. वल्लभभाई कथिरिया (राजकोट)।

आयोजन श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (प्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात) की अध्यक्षता में किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में गुजरात के राज्यपाल महामहिम श्री ओम प्रकाश कोहली जी सपत्नीक उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. विनय विद्यालंकार एवं श्री एस के शर्मा जी का विशेष प्रवचन हुआ। विशेष आमन्त्रित के रूप में डॉ. बल्लभभाई कथीरिया (अध्यक्ष, गौ सेवा सदन गुजरात) श्री बामनजी भाई मेटालिया (स्थानीय विधायक) ने भी अपने विचार रखे। इस अवसर पर श्री लधाभाई पटेल, श्री अरूण अब्रोल, श्री योगेश मुंजाल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री हंसमुख परमार, श्री वाचोनिधी आर्य, श्री अविनाश भट्ट, स्वामी शान्तानन्द एवं साध्वी उत्तमायति उपस्थित थे। इस वर्ष आर्य

श्रद्धांजलि सभा में मुख्य मंच पर महामहिम महोदय के साथ उपस्थित श्री अरूण अवरोल, श्री सुधीर मुंजाल, श्री योगेश मुंजाल, कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री सुरेश अग्रवाल जी एवम् श्री लद्धा भाई पटेल।

समाज जामनगर के श्री अविनाश भट्ट जी को टंकारारत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। इसी अवसर पर स्वामी संकल्पानन्द स्मृति सम्मान स्वामी शान्तानन्द (भुज) को दिया गया जोकि प्रतिवर्ष इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई की ओर से दिया जाता है।

महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी को गुजरात राज्य की ओर से श्री वाचोनिधी आर्य (गांधीघाम) की ओर से विशेष कच्छ की पगडी एवं शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी ने टंकारा ट्रस्ट की मासिक पत्रिका टंकारा समाचार के ''ऋषि बोधांक'' का लोकार्पण किया।

इस अवसर पर श्री एस के शर्मा (मन्त्री, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा) ने सम्पूर्ण कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए टंकारा में तैयार हो रहे ब्रह्मचारियों के सर्वांगीण विकास के लिए जो प्रयास टंकारा ट्रस्ट द्वारा किए जा रहे हैं, उसके लिए सभी ट्रस्टीयों का साधुवाद करते हुए कहा कि उपदेशकों को विदेशी भाषाओं में भी निपुण करना होगा। आपने डी.ए.वी. के प्रधान श्री पूनम सूरी जी के द्वारा भेजा गया भाषण भी

टंकारा समाचार का बोधांक का महामहिम राज्यपाल महोदय से लोकार्पण कराते हुए श्री सुधीर मुंजाल एवम् मंच पर आसीन अन्य अधिकारीगण

सभा को सम्बोधित करते हुए महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश जी कोहली

पढ़कर सुनाया जिसमें आपने वेदों और सत्यार्थ प्रकाश को जन-जन तक पहुंचाने की ओर संगठित रूप से कार्य करने की प्रेरणा दी। आए हुए सभी ऋषि भक्तों को प्रोत्साहित किया कि वे प्रण लें जिस शहर से वह आए हैं वहां के प्रत्येक घर में कम-से-कम एक सत्यार्थ प्रकाश जरूर पहुंचाएंगे। आगे उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. (दयानन्द एग्लो वैदिक) में भी हम दयानन्द और टंकारा से प्रेरणा लेकर अपने विद्यालयों के माध्यम से आर्य समाज और वेद प्रचार का कार्य कर रहे हैं और इसी के साथ गुरुकुलीय पद्वति से प्रेरणा ले अपने बालकों के चरित्र निर्माण पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। डी.ए.वी. आज राष्ट्र की सरकार के बाद सबसे बड़ी शिक्षण संस्था है। इसका सारा श्रेय मैं आर्य समाज और स्वामी दयानन्द को देता हूं। जिनके बताए हुए मार्ग पर चलकर हम कुछ कार्य कर पा रहे हैं।

डॉ. विनय विद्यालंकार ने अपने वक्तव्य में कहा कि आज अवश्यकता है कि गुरुकुलों की और विशेष कर भारत वर्ष में बिखरे हुए असंख्य गुरुकुलों को एक बड़ी संस्था के अधीन लाने की, आज के परिपेक्ष्य में जहां आधुनिक विज्ञान के माध्यम से शिक्षित युवा चाहिए वहां गुरुकुलीय पद्वति से पढ़े हुए सुसंस्कारित परिपक्व ब्रह्मचारियों की आवश्यकता भी उतनी ही है। अच्छा होगा अगर ऐसे गुरुकुल जो दोनों पद्वति का समन्वय हो, आज आवश्यकता इसी प्रकार की शिक्षा पद्वति की है।

अन्त में महामहिम राज्यपाल श्री ओम प्रकाश कोहली जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि मैं आज इस टंकारा जन्मभूमि में आकर अपने गौरवन्वित अनुभव कर रहा हूं। गुजरात राज्य को यह सौभाग्य प्राप्त है कि उसने स्वामी दयानन्द महात्मा गांधी श्री वल्लभ भाई पटेल, श्री मुराज जी देसाई जैसे राष्ट्र पुरुष इस देश को दिये है।

स्वामी दयानन्द की नारी शिक्षा के क्षेत्र में योगदान स्मरणीय है आज भारत की नारी जिस प्रकार कन्धे से कन्धा मिलाकर हर क्षेत्र में प्रगति कर रही है इसका श्रेय केवल मात्र स्वामी दयानन्द को जाता है। स्वामी जी द्वारा सती प्रथा, बाल विवाह, रूढ़ीवादिता, पाखण्ड जैसी प्रथाओं को समाप्त करने में योगदान दिया है। लेकिन उनके कई कार्य आज भी अधूरे हैं। इसलिए आर्य समाज विशेषकर इस जन्मभूमि का दायित्व अधिक बढ़ जाता है कि उनके अधूरे सपनों को पूर्ण किया जाए।

मंचासीन डॉ. विनय विद्यालंकार, डॉ. अविनाश भट्ट, स्वामी सन्तानन्द जी एवम् साध्वी उत्तमायति

रात्रि सत्र में श्रद्धांजलि सभा श्री योगेश मुंजाल जी की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ जिसमें श्री डॉ. विनय विद्यालंकार के प्रभावशाली प्रवचन हुए और श्री कुलदीप शास्त्री एवं श्रीमती सुनीता के भजनों द्वारा स्वामी जी के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके अतिरिक्त पधारे हुए आर्य जनों ने भी स्वामी दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी अवसर पर स्वामी आर्येशानन्द सरस्वती द्वारा भारत भर से पधारे हुए संन्यासीवृन्दों एवं वानप्रस्थियों को शॉल एवं मानदेय देकर सम्मानित किया गया।

दिनांक 18 फरवरी 2015 को यज्ञ एवं प्रवचन प्रात: 8 बजे से 10 बजे तक हुए। इसी अवसर पर आचार्य सत्यदेव पुरस्कार वितरण किया गया जिसके अन्तर्गत ब्रह्मचारी मनोरंजन को प्रथम, ब्रह्मचारी जगवीर को द्वितीय एवं ब्रह्मचारी अनूप को तृतीय पुरस्कार दिया गया।

श्रीमती लीलावती महाशय
'आर्य महिला' पुरुस्कार से सम्मानित

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल की प्रधान संचालिका विदुषी साध्वी डॉ. उत्तमा यति जी को सांताक्रूज आर्य समाज के 71वें वार्षिक उत्सव पर दिनांक 25 जनवरी 2015 को श्रीमती लीलावती महाशय 'आर्य महिला' पुरुस्कार से सम्मानित किया गया। साध्वी जी को इससे पूर्व भी बहुत से प्रतिष्ठित सम्मान दिये गये हैं। आप विश्व भर में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में संलग्न है। ईश्वर आपको स्वस्थ रखते हुए शतायु करें।

- मृदुला चौहान, संचालिका

विश्व संगठन के वैदिक आधार मैत्री और समता

❒ स्व. प्रो. उमाकान्त उपाध्याय

पश्चिमी देशों में सामाजिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का आधार रहा है। डार्विन के विकासवाद का सिद्धान्त–''योग्यतम की जीत''। योग्यतम की जीत का अर्थ लगाया जाता है जो बलवान हो, संघर्ष में जीत जाये, वहीं संसार में टिकता है। उदाहरण देते हैं छोटी मछली को बड़ी मछली खा जाती है और बड़ी मछली का राज होता है। जंगल में शेर आदि निर्बल जानवरों को खाकर जंगल का राज करते हैं। शेर जंगल का राजा कहा ही जाता है। यही सिद्धान्त मानव समाज में भी लागू होता है। पश्चिमी देशों के इस चिन्तन का सबसे बड़ा दोष यह है कि योग्यतम की जीत का यह सिद्धान्त पशु पर तो लग सकता है किन्तु मनुष्य समाज पर यह सिद्धान्त लागू नहीं होता। मनुष्य विवेकवान, विचारशील प्राणी है। मनुष्य के लिए उसके स्वभाव में है न्याय, सत्य, स्नेह, प्रेम, श्रद्धा। मनुष्य अपने स्वभाव से असत्य और क्रूरता से दूर रहता है। सत्य परोपकार दूसरों की भलाई पर मनुष्य को श्रद्धा होती है। परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया ही ऐसा है– ''अश्रद्धा मनृत्ये दधात् श्रद्धां सत्ये प्रजापतिः।'' अर्थात् परमेश्वर ने संसार में असत्य, क्रूरता, दुष्टता इत्यादि को देखा और सत्य, करूणा, सज्जनता इत्यादि दोनों तरह के कार्यों को पाया। वेद का मन्त्र यह कहता है कि परमेश्वर ने मनुष्य के हृदय में सत्य, करूणा, दया आदि के प्रति श्रद्धा पैदा कर दी और असत्य, क्रूरता आदि के प्रति अश्रद्धा पैदा कर दी है। अतः आज भी मानव संगठन का आधार सत्य, आदि मानवीय गुण है और असत्य क्रूरता आदि दानवीय गुण संघर्ष के आधार हैं।

कार्लमार्क्स ने जब यूरोप के औद्योगिक विकास का अध्ययन किया तो उसे डार्विन के सिद्धान्त ''योग्यतम की जीत'' के आधार पर ज्ञात हुआ कि मिल के मालिक उद्योगपति निर्बल मजदूरों का शोषण कर रहे हैं, अतः मार्क्स ने वर्ग संघर्ष को उन्नति का आधार बताया। किन्तु यह सर्वत्र लागू होने वाला सिद्धान्त नहीं है। यह मार्क्स के समय में अथवा कभी भी कहीं भी धनवानों द्वारा निर्धन मजदूरों का शोषण है। जैसे योग्यतम की जीत मानव संगठन का आधार नहीं बन सकता उसी प्रकार सदा सर्वत्र वर्ग संघर्ष भी मानव संगठन का आधार नहीं हो सकता।

यूरोप में अन्तर्राष्ट्रीय संगठन का आधार ''उपनिवेशवाद'' को बनाया। इसी आधार पर अमेरिका, अफ्रीका, भारतवर्ष आदि देशों में अपने देशों के उपनिवेश बनाये। उपनिवेशवाद का सिद्धान्त सभी देशों में संघर्ष का कारण बना। इन्हीं सिद्धान्तों के आधार पर संसार में विश्वयुद्ध हुए। प्रथम विश्वयुद्ध और द्वितीय विश्वयुद्ध का आधार स्वार्थी राष्ट्रवाद बना।

प्रथम विश्वयुद्ध के बाद राष्ट्रों में मिलजुल कर रहने की भावना का थोड़ा सा उदय हुआ। इसका सुफल निकला संसार के राष्ट्रों ने लीग आफ नेशन्स का संगठन किया किन्तु इस राष्ट्र संघ का आधार मैत्री और समता नहीं था। इसका फल यह हुआ कुछ ही वर्षों में राष्ट्र संघ का यह संगठन बेकार हो गया और संसार ने विश्वयुद्ध का दूसरा नरसंहार का, अत्यन्त हृदयविदीर्ण करने वाला हिरोशिमा, नागासाकी का एटम बम की विनाश लीला और हिटलर के गैस चेम्बर की अकल्पनीय विनाश लीला का अनुभव किया।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संसार में शान्ति बनी रहे इसके निमित्त ''संयुक्त राष्ट्र संद्य'' (यू.एन.ओ.) का संगठन किया। विश्वयुद्ध के कारणों का इतिहास कुछ अधिक सुस्पष्ट रूप से सामने था। अतः थोड़ी अधिक सूझ-बूझ, मैत्री और समता दिखायी पड़ती है। संयुक्त राष्ट्र संद्य का क्षेत्र भी अधिक बड़ा बना। साधारण समिति, सुरक्षा परिषद्, विश्व बैंक, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि की भी संरचना की गयी। यह सभी संगठन थोड़े अधिक मैत्री और समानता के आधार पर बने हैं किन्तु सब जगह कुछ राष्ट्रों की महिमा संगठन की निर्बलता का कारण बन रही है। अमेरिका अपनी दादागिरी बनाये रखना चाहता है। अमेरिका, इंगलैण्ड, फ्रांस, रूस, चीन का विशेषाधिकार-वीटो-संगठन को निर्बल बना रहा है। यह राष्ट्र अपने स्वार्थ को अन्य देशों से बढ़कर मानते हैं। यह संगठन के लिए बड़ी भारी निर्बलता बन गया है।

विश्व बैंक और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष में अमेरिकन डालर का वर्चस्व सर्वोपरि बना रहता है। संसार की अन्य मुद्रायें, रूपये आदि क्रय शक्ति के आधार पर नहीं है। विश्व बैंक या अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष विनिमय दर को विश्व के बाजार के आधार पर रखते हैं। जबकि विनिमय का आधार ''क्रय शक्ति की समानता''। (पर्चेजिंग पावर पैरिटी) होना चाहिए। यह असमानता की भावना और सुरक्षा परिषद् आदि में वीटो संयुक्त राष्ट्र संघ की चिन्ताजनक निर्बलताएं हैं। ये निर्बलताएं विश्व संगठन के लिए आत्मघातक सिद्ध हो सकती है।

वैदिक आदर्शो के आधार पर समानता और सबका कल्याण, सारे विश्व का कल्याण काम्य है-**''सर्वे भवन्तुः, सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्॥''**

भारतीय ऋषियों के चिन्तन में जनतन्त्र का बहुमत नहीं था। वहाँ ऋषि सर्वसुख, सर्वकल्याण की भावना को प्रश्न देते हैं। वेद की दृष्टि में भूतमात्र से, प्राणिमात्र से मित्रता की कामना की गयी है– **''मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्। मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे॥''**

अर्थात् हम प्राणी मात्र को मित्रता की दृष्टि से देखें और प्राणी मात्र हमें मित्र की दृष्टि से देखें। इस वैदिक सूत्र में केवल मनुष्य के प्रति मैत्री की भावना को अल्प समझा गया है। पशु-पक्षी संसार के सभी जीव-जन्तुओं को मैत्री की भावना से देखने की कामना है। यही मैत्री की भावना सभी राष्ट्रों में व्याप्त होकर संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे विश्व संगठनों का आधार बने। संसार के राष्ट्रों के संगठन का आधार राष्ट्रो में समता की भावना है। यदि राष्ट्र आपस में छोटे राष्ट्र, बड़े राष्ट्र, बलशाली राष्ट्र, निर्बल राष्ट्र की भावना रखेंगे तो समानताहीन विश्व संगठन दोषपूर्ण और निर्बल हो जायेगा।

ऋग्वेद में विश्व नागरिक की अवधारणाः– वेदों के मर्मज्ञ विद्वान स्वामी समर्पणानन्द जी (बुद्धदेव विद्यालंकार) ने एक अध्ययन प्रस्तुत किया है-**''ऋग्वेद का मण्डल-मणि-सूत्र।''** ऋग्वेद में दस मण्डल है। प्रथम मण्डल से दशम मण्डल तक एक विचारों की मणिमाला मिलती है। यह मणिमाला विश्व संगठन, विश्व शासन और विश्व नागरिक की अवधारणा को पुष्ट करती है। इस विश्व शासन, विश्व नागरिक और विश्व संगठन का आधार नागरिकों और राष्टों में समानता है। ऋग्वेद के अन्तिम सूक्त का तीसरा मन्त्र विशेष रूप से समानता का उद्घोष करता है–

''ओं समानो मन्त्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तेमेषाम्। समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः। सामनेन वो हविषा जुहोमि॥'' मन्त्र का संक्षेप में भाव यह है कि सभी राष्ट्रों में समान विचार हो और संगठन की समितियों में समानता हो। सबके मन व चित्त में समानता हो। सभी राष्ट्रों में चिन्तन और विचार की समानता हो और सारे राष्ट्रों का प्राप्तव्य समानता के आधार पर हो। यही मैत्री और समानता विश्व संगठन का सुदृढ़ आधार है।

– पी-30, कालिन्दी हाऊसिंग एस्टेट, कोलकाता-700089

समाचार दर्पण

उल्लेखनीय समाज सेवा के लिए अर्जुनदेव चड्ढा सम्मानित

कोटा क्षेत्र में समर्पित भाव से व निष्ठापूर्वक किए जा रहे विभिन्न समाज सेवा कार्यो के लिए आर्य समाज के जिला प्रधान एवं पंजाबी जनसेवा समिति के अध्यक्ष अर्जुनदेव चड्ढा को एक भव्य कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पुलिस महानिरीक्षक डॉ. रवि प्रकाश मेहरड़ा द्वारा शॉल औढ़ाकर, सम्मान पत्र व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया गया।

ऋग्वेद मराठी भाषा में अनुवादित

<u>आर्यसमाज संभाजीनगर (औरंगाबाद-महाराष्ट्र)</u> की ओर से आर्यसमाज के उपप्रधान सौ. सविता बलवंतराव जोशीजी द्वारा ऋग्वेद का मंडल 1 का प्रकाशन अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में विमोचन हुआ था। अब की बार हैदराबाद मुक्ती संग्राम के शहीद वेदप्रकाश के गांव गुंजोटी तहसिल उमरगा, जि. धाराशिव में आर्यसमाज भवन के उद्घाटन समय पर ऋग्वेद मण्डल 2 एवम् 3 का प्रकाशन पू. स्वामी धर्मानन्दजी महाराज आमसेना गुरुकुल उड़ीसा के करकमलों द्वारा किया गया। जिसमें महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष मा. उग्रसेनजी राठोड़, सभा के प्रचारक पं. सुधाकर जी शास्त्री, उपप्रधान दयाराम राजाराम बसैये (बंधु), प्रधान पूज्य ब्रह्ममुनीजी वानप्रस्थी, मा, ॲड, प्रकाशजी आर्य मन्त्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, पू. स्वामी श्रद्धानन्दजी संरक्षक सभा, पू. स्वामी व्रतानन्दजी गुरुकुल, पं. धर्मवीरजी अजमेर, आमसेना और सभी मान्यवरों की उपस्थिती में कार्य सम्पन्न हुवा।

हमें वेद मार्ग पर चलना चाहिए

<u>आर्य केन्द्रीय सभा पानीपत</u> के तत्वावधान में महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती का ऋषि बोधोत्सव आर्य समाज हुड्डा में समारोहपूर्वक मनाया गया। यज्ञ आचार्य संजीव वेदालंकार तथा आचार्य संजय शास्त्री ने वैदिक रीति से करवाया। ध्वजारोहण श्रीमती बेला भाटिया के कर-कमलो द्वारा किया गया। समारोह की अध्यक्षता श्री भगवान आर्य ने की। मुख्य अतिथि श्री चन्द्र पाल आर्य रहे एवम् विशिष्ठ अतिथि श्री राजेश चुभ थे।

गुरुकुल प्रवेश सूचना

<u>स्वामी श्रत्तमानन्द गुरुकुल विज्ञान आश्रम (पाली) राजस्थान</u> में अप्रैल 2015 में जून 2015 तक प्रवेश छठी कक्षा से होते है। विद्यार्थी कुशाग्र बुद्धि व शारीरिक रूप से स्वस्थ होना चाहिए। पूज्यपाद स्वामी विवेकानन्द जी सरस्वती की संरक्षण एवं देखरेख से संचालित यह गुरुकुल महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आदर्शो को पूरा करने का प्रयास कर रहा है। आर्ष शिक्षा प्रणाली के माध्यम से ब्रह्मचारी विद्या अध्ययन करते हैं। प्राचीन वैदिक साहित्य का अन्वेषण रक्षा तथा प्रचार एवं भारतीय संस्कृति भारतीय शिक्षा भारतीय विज्ञान और चिकित्सा द्वारा जनता की सेवा करने के उद्देश्य से ही विद्यार्थियों को प्रशिक्षित किया जा रहा है। इस गुरुकुल का विद्यार्थी अपने आचार विचार में पूर्णत: भारतीय संस्कृति में एक आदर्श प्रतिमान उपस्थित करता है। गुरुकुलीय दिनचर्या में छात्रों के परस्पर व्यवहार की भाषा देवभाषा संस्कृत है। प्रवेश के समय प्रवेश शुल्क 3000 रूपये एवं प्रारम्भिक आवश्यक वस्तुओं के लिए 500 रूपय। इस प्रकार 3500 रूप्ये अधिकोषित कराने पड़ते है।

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

<u>मोनेट डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, मंदिर हसौद रायपुर</u> के पवित्र प्रांगण में वृहद यज्ञ का आयोजन हुआ। सर्वप्रथम विद्यालय के प्राचार्य डॉ. बी.पी. साहू जी ने दीपक प्रज्जवल के साथ कार्यक्रम का विधिवत शुभारम्भ किया। तत्पश्चात् यज्ञ का शुभारम्भ हुआ जिसमें यज्ञवेदी में मुख्य यजमान के रूप में प्राचार्य महोदय उपस्थित थे। प्राचार्य डी.बी. साहु ने कहा कि स्वामी जी परतन्त्र भारत के निर्भिक सन्यासी के रूप में जाने जाते हैं। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन चरित्र देशोत्थान के लिए वैदिक धर्म के पुनरोत्थान के लिए गुरुकुलीय शिक्षा पद्वति को पुनर्जीवित करने के लिए स्वामी जी ने अपना सर्वस्य राष्ट्र को समर्पित कर दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द दिवस समारोह

<u>आर्य समाज खेड़ा अफगान सहारनपुर</u> में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर प्रथम अनुज कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया। आज के यजमान वीरेन्द्र कुमार और उनकी धर्मपत्नी विजय लक्ष्मी गुप्ता रहे। यज्ञोपरान्त श्रद्धेय डॉ. ओमप्रकाश वर्मा ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डाला। पूर्व अपर जिला अधिकारी श्री सत्यवीर आर्य ने कहा स्वामी श्रद्धानन्द पहले सन्यासी थे जिन्होंने दिल्ली के जामा मस्जिद के मिम्बर से वेद मन्त्रों द्वारा अपना व्याख्यान आरम्भ कर हिन्दू मुस्लिम एकता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मानसरोवर, रजत पथ, जयपुर-302020

प्रधान- श्री अर्जुनदेव कालड़ा **मन्त्री**- श्री सुरेश साहनी

कोषाध्यक्ष- श्री ओ.पी. गुप्ता

आर्य समाज किशनपोल बाजार, जयपुर

प्रधान- श्री ओ.पी. वर्मा **मन्त्री**- श्री कमलेश शर्मा

कोषाध्यक्ष- श्री दिनेश चन्द शर्मा

वार्षिकोत्सव सम्पन्न

हरिपुर जुनानी (ओड़िशा) का पंचम चतुर्वेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति एवं वार्षिक महोत्सव करूणावरूणालय प्रभु की असीम अनुकम्पा, पूज्य सन्तों व विद्वज्जनों के सान्निध्य एवं ओड़िशा, छ.ग. बंगाल, दिल्ली, म.प्र.,उ.प्र. आदि प्रान्तो से आगन्तुक श्रद्धालु हजारों नर-नारियों की पावन उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। त्रिदिवसीय सम्पूर्ण कार्यक्रमों का उद्घाटन गुरुकुल के यशस्वी प्रधान,आदरणीय श्री जयदेव आर्य राजकोट के शुभकरकमलों से ध्वजोत्तोलन पूर्वक प्रारम्भ हुआ।

महोत्सव के अवसर पर पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती गुरुकुल आमसेना, पूज्य स्वामी अमृतानन्द सरस्वती (म.प्र.) डॉ. शिवदत्त पाण्डे (उ.प्र), आचार्य अंशुदेव प्रधान-छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रति सभा दुर्ग, गुरुकुल के संरक्षक, श्री खुशहालचन्द्र आर्य कोलकाता, आचार्य राहुलदेव शास्त्री, डॉ. कैलाशचन्द्र शास्त्री एवं ओड़िशा के अनेक साधु-सन्तों विद्वान उपस्थित होकर सबको प्रेरित लाभन्वित किये।

❑❑❑

आर्य समाज कलकत्ता का 121वाँ वार्षिकोत्सव आम्हर्स्ट स्ट्रीट अवस्थित ऋषिकेश पार्क में हर्षोललास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में प. बंगाल प्रान्त के अतिरिक्त, झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश एवं नेपाल से भी सैकड़ो जन उपस्थित हुए। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी (अजमेर) के ब्रह्मत्व में अथवेद पारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। मुख्य यजमान प्रधान श्री मनीराम आर्य, मन्त्री सत्यप्रकाश जायसवाल एवं पूर्व प्रधान श्री राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल जी ने संकल्पपूर्वक अथर्ववेद प्रारायण यज्ञ को प्रारम्भ किया।

'ओ३म' ध्वजारोहण आचार्य डॉ. धर्मवीर जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। अपराह्न 2 बजे से आर्य समाज मन्दिर 19 विधान सरणी कोलकाता-6 से एक विशाल एवं सुसज्जित शोभायात्रा निकाली गयी।

आर्य समाज ने बांटे स्वेटर

आर्य समाज जिला सभा कोटा की ओर से आज राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय बोरखेड़ा में छात्राओं को गर्म कपड़े और कॉर्डियन बांटे गए। स्वेटर और मौजे पाकर छात्राओं के चेहरे खिल उठे। आर्य समाज जिला सभा के प्रधान अर्जुन देव चढ्डा ने कहा कि आर्य समाज हर वंचित व्यक्ति की सुरक्षा करने में विश्वास करता है। जरूरतमन्द की सेवा करने से बड़ा कोई धर्म नहीं है। भीषण सर्दी से बचाव के लिए बालिकाओं के लिए गर्म कपड़े आवश्यक थे।

वैदिक चेतना शिविर

चरित्र निर्माण, वैदिक धर्म तथा संस्कृति की रक्षाहेतु **डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल पश्चिमी पटेल नगर, नई दिल्ली** में दिनांक 31 जनवरी 2015 को वैदिक चेतना शिविर का आयोजन किया गया। कक्षा पांचवी छठी तथा सातवीं के सभी छात्र छात्राओं ने लगभग 180 विद्यार्थियों ने प्रात: 8 बजे से सायं 4 बजे तक शिविर के कार्यक्रमों में बड़े उत्साह एवं प्रसन्नता से भाग लिया। शिविर का आरम्भ शास्त्री जी ने हवन से किया। मुख्य यजमान प्रधानाचार्या रश्मि गुप्ता जी थी अध्यापिकाओं तथा छात्रों ने हवन में सामूहिक आहुतियां डाली।

संगीतमय वेदकथा एवं राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ सम्पन्न

महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति आर्य समाज कोटा द्वारा ग्रामीण क्षेत्र में वेद प्रचार कार्यक्रम के तहत कोटा जिले के इटावा कस्बे में दो दिवसीय संगीतमय वेदकथा (वैदिक प्रवचन) तथा ग्यारह कुण्डीय राष्ट्र समृद्धि महायज्ञ का आयोजन कियाग या।

अलीगढ़ (उ.प्र.) से पधारे आर्य समाज के ख्याति प्राप्त भजनोपदेश पं. भूपेन्द्र सिंह आर्य एवं लेखराज शर्मा ने अपने सुमधुर भजनों एवं गीत के माध्यम से आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों तथा कार्यो से अवगत कराया। कार्यक्रम में जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि गांवो में वेद का प्रचार अत्यन्त जरूरी है। समाज में व्याप्त अंधकार वैदिक सिद्धान्तो के ज्ञान से ही दूर होगा।

विश्व शान्ति महायज्ञ

विश्व शान्ति महायज्ञ आचार्य सुनील दत्त शास्त्री जी फिरोजपुर ने तीनों दिन लगातार अपने अमृतमय वचनों व ज्ञान वर्षा के द्वारा श्रोतागणों व यज्ञमानों को मन्त्रमुग्ध करते रहे। आचार्य जी ने बताया कि सन्तानों व मनुष्यो का निर्माण सत्यार्थ प्रकाश के द्वारा सम्भव है यदि हम बच्चों को प्रारम्भ से ही धार्मिक नहीं बनायेगें तो वे डाक्टर इन्जीनियर वकील तो बन सकते है लेकिन सच्च मानव नहीं बन सकते। इस प्रकार आचार्य जी ने धार्मिकता मानवता, ईश्वर उपासना, यज्ञ के द्वारा पर्यावरण संरक्षण, रोग निवारण अनेक विषयों पर बहुत ही सरल मधुरमय सरस व्याख्यान दिये।

❑❑❑

श्री कृष्ण चेतना समिति मानसरोवर जयपुर द्वारा जन कल्याणार्थ विश्वशान्ति यज्ञ का आयोजन वैदिक पद्घति से पूर्ण श्रद्धा सहित हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा तथा सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद के राजस्थान प्रदेशाध्यक्ष यशपाल यश ने अपने संबोधन में प्रकट किया कि आतंक से भरे विश्व में हाहाकार को बहुत कुछ यज्ञों के माध्यम से शांत किया जा सकता है। समिति के मन्त्री नन्द किशोर कांबोज के अनुसार नगर पार्षदों सहित नेत्र एवं देहदान समिति के अध्यक्ष हरिचरण सिंहल के आह्वान पर ततवलं पर ही पांच देहदान तथा 10 नेत्रदान संकल्प पत्र प्राप्त हुए।

ईश्वर कहां है? कैसा है? और क्या करता है?

ईश्वर का स्वरूप

(ईश्वर के विषय में अत्यन्त रोचक और उद्बोधक परिचर्चा)

दक्षिण दिल्ली के विभिन्न प्रेसिडेन्ट वेलफेयर एसोसिएशन, धार्मिक एवम् सामाजिक संस्थाओं का संयुक्त प्रयास।

दिनांक 5 अप्रैल 2015 (रविवार को सायं 4 बजे से सायं 8.30 बजे तक आर्य ऑडिटोरियम, चन्द्रवटी स्मारक ट्रस्ट, देशराज परिसर, सी ब्लॉक, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

आप सभी सादर आमन्त्रित है। कृप्या अपना नाम अग्रिम पंजीकरण करने के लिए **श्री अजय कुमार** (9811111989), **श्री राजीव चौधरी** (9810014097), **कर्नल गोपाल वर्मा** (9811121242) से सम्पर्क करें। (विस्तृत विवरण अगले अंक में पढ़ें।)

योग-ध्यान, साधना शिविर निमन्त्रण

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 11 से 19 अप्रैल 2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यो एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि कराए जाएंगे तथा योगदर्शन-पठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री सन्दीप आर्यजी, प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधार रहे है। डॉ. सुरेश योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रम्हत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। आश्रम में पूज्य महात्मा जी के सान्निध्य में पहले लगाए गए शिविरों में शिविरार्थियों के बहुत अच्छे अनुभव रहे हैं इसलिए साधकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन न. 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

स्वामी दयानन्द स्टडीज सैन्टर

बड़े हर्ष का विषय है कि यूनिवर्सिटी ग्रांट्स कमीशन भारत सरकार की ओर से प्रदत्त आर्थिक सहयोग से **दोआबा कॉलेज जालन्धर** में 'स्वामी दयानन्द स्टडीज सैन्टर' सत्र 2014-15 से स्थापित किया गया है। इस सैन्टर के माध्यम से स्वामी दयानन्द की शिक्षाओं को विद्यार्थियों तथा आम जनता तक पहुंचाने के साथ-साथ शोधकार्य, संगोष्ठी, कार्यशाला आदि भी आयोजित किए जाएंगे। स्वामी दयानन्द के समस्त साहित्य को डिजिटल रूप में इण्टरनेट (www.doabacollege.net) पर उपलब्ध कराने की योजना भी तैयार की गई है। सभी आर्य समाजों के पदाधिकारियों, आर्य सामाजिक संस्थाओं तथा आर्यजनों से निवेदन है कि यदि उनके पास स्वामी दयानन्द का कोई भी ग्रन्थ किसी भी भाषा के किसी भी फॉन्ट (चाणक्य, कृतिदेव, शूषा आदि) में कम्पोज किया हुआ है तो वे हमारे E-mail:dayanandstudy@doabacollege.nt पर वह सामग्री भेजने की कृपा करें। हम उस सामग्री को इन्टरनेट के लिए यूनिकोड फॉन्ट में परिवर्तित कर कॉलेज की उपरोक्त वैबसाइट पर अपलोड कर देंगे। आशा है ऋषिवर दयानन्द के इस पुनीत कार्य में आपका सहयोग हमें अवश्य प्राप्त होगा।

टंकारा गौशाला में गौ-पालन एवं पोषण हेतु अपील

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा स्थित गौशाला में दान स्वरूप प्राप्त गौ से जहां एक ओर ब्रह्मचारियों हेतु दूध प्राप्त हो रहा है, वहीं बढ़ती गायों के पालन-पोषण हेतु ट्रस्ट पर आर्थिक बोझ पड़ रहा है। आपकी जानकारी हेतु गौशाला से प्राप्त दूध को बेचा नहीं जाता है। ऐसी स्थिति में आप सभी आर्यजनों, दानदाताओं, गौभक्तों से प्रार्थना है कि इस मद में ट्रस्ट की सहायता करने की कृपा करें। एक गाय के वार्षिक पालन-पोषण पर **7000/-**रुपये व्यय आ रहा है, जिससें हरा चारा एवं पौष्टिक आहार जो चारे में मिलाया जाता है तथा गौशाला का रखरखाव सम्मिलित है। आप सभी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार राशि भेजकर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, के नाम केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001** के पते पर पर भिजवाकर कृतार्थ करें। **टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।**

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

गौ-दान : महा-दान

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय में ब्रह्मचारियों की दिन- प्रतिदिन बढ़ती संख्या के कारण टंकारा स्थित 'गौशाला' से प्राप्त दूध ब्रह्मचारियों हेतु पर्याप्त नहीं हो पा रहा है। इस कारण ट्रस्ट ने यह निश्चय किया कि तुरन्त नयी गायों को खरीद लिया जाये ताकि ब्रह्मचारियों को पर्याप्त मात्रा में दूध उपलब्ध कराया जा सके।

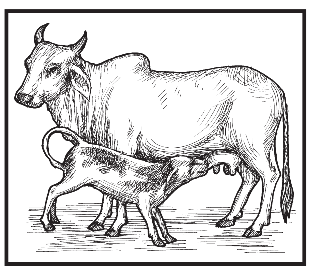

टंकारा स्थित गौशाला हेतु भारत के असंख्य आर्य परिवारों एवं आर्य संस्थाओं की ओर से 20000/- रुपये प्रति गाय हेतु दानराशि प्राप्त हो रही है। गुरुकुल में ब्रह्मचारियों की बढ़ती संख्या को देखते हुए एवं कच्छ में गरम वातावरण होने के कारण गौओं का कम दूध देने के कारण अभी भी गायों की आवश्यकता है। दानी महानुभावों से निवेदन है कि इस पुण्य कार्य में अपनी श्रद्धानुसार आहुति डाल कर पुण्यार्जन करें। आप इस पुण्य कार्य के लिए राशि **श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा,** के नाम चैक/ ड्राफ्ट द्वारा केवल खाते में आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-110001 पर भिजवाकर कृतार्थ करें।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

सत्यानन्द मुंजाल (मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान) **शिवराजवती आर्या** (उप-प्रधाना) **रामनाथ सहगल** (मन्त्री)

नैतिक विकास के लिए 8 कदम

अच्छे अभिभावक बनने की दिशा में प्रयास शुरु कर बच्चों में सही नैतिक मूल्यों का विकास करें। हमने आए ऐसे उपाय तय किए हैं जिन्हें बतौर अभिभावक हमें अपनाना चाहिए।

उपाय 1: कहानी सुनाने की कला सीखें- अच्छी कहानियां आपके बच्चे में जीवन के प्रति सकारात्मक रवैया पैदा करने और उन्हें अधिक मित्र बनाने में भी सहायत होती है। कहानियां और वे भी पंचतन्त्र जैसी पुस्तकों की छोटी कहानियां इस लिहाज से अच्छी होती है और जब कभी आपके बच्चे के राह से भटकने की आशंका हो तो ये कहानियां ही उनके लिए चेतावनी सूचक बन जाती है। कहानियां जीवन के आरम्भिक वर्षो में जो प्रभाव उन पर डालेंगी, वैसा असर शायद बाद में कॉलेज की डिग्रियां भी नहीं दिखा पाएं।

उपाय 2: उनका मित्र बनें- बच्चों के मन से 'अगर ऐसा हुआ तो' जैसी आशंकाएं दूर करें और उन्हें भरोसा दिलाएं कि वे जब कभी भी मुश्किल या सन्देह में होंगे तो आपकी उनकी मदद के लिए हमेशा साथ होंगे। आप उनकी बचकाना आशंकाओं या बेवकूफी-भरे विचारों पर हंसने की बजाय उनकी सोच को दुरुस्त करेंगे। उन्हें आपका पूरा-पूरा समर्थन मिलता रहेगा। उन्हें बताएं कि वे जब चाहें आपके पास आ सकते हैं और अपनी गलतियां बता सकते हैं तथा यह भी कि आप इस बारे में आनन-फानन में कोई फैसला करने की बजाय पहले उनकी पूरी बात सुनेंगे और जैसा जरूरी हुआ वैसी मदद भी करेंगे। उन्हें बताएं कि वे आपके बच्चे हैं और जीवन-भर उनका यही दर्जा रहेगा, भले ही जीवन में उनके साथ कुछ भी हो जाए-चाहे वे चपरासी बनें या राष्ट्रपति, गरीब से गरीब इंसान हों या अमीर से अमीर बन जाएं। उनके प्रति आपका विश्वास जरूरी है।

उपाय 3: उनकी जगह खुद को रखकर देखें- बच्चों की परिस्थितियों की तुलना अपनी उन स्थितियों से मत करें जो कम-से-कम पच्चीस साल पहले तब थी जबकि आप उनकी उम्र के थे। तबसे अब तक हालात बहुत बदल चुके हैं। आप अपने माता-पिता के भक्त होते थे और यह तब के सामाजिक माहौल का असर था, आप उनकी हर बात को बगैर न-नुकुर के मान लिया करते थे।

लेकिन याद रखें कि आपके बच्चे आज के उस समाज की उपज हैं जो 'सूचना विस्फोट' की स्थिति से गुजर रहा है। आपके बच्चे सामाजिक मूल्यों को लेकर भ्रमित है। इसलिए उनके साथ धैर्य से पेश आएं। वे समझदार हैं। आपके पचास वसन्तों के बराबर अनुभव और ज्ञान उन्हें अपने जीवन के पच्चीस वसन्त देखने पर ही हो जाता है।

अच्छा अभिभावक बनने के लिए आपको खुद को उनकी जगह रखकर देखना होगा और यह समझना होगा कि आपके बच्चों की भावनाएं तथा जरूरतें आपसे अलग हैं। बच्चों से कभी अहसान मानने की उम्मीद मत रखें और अगर कभी ऐसा होता भी है, तो इसे सुखद आश्चर्य की तरह लें। आपके बच्चे सोचते हैं कि आप उन्हें जो कुछ भी देते हैं वह पाना तो उनका जन्मसिद्ध अधिकार है-दरअसल, बचपन से ही उन्हें ऐसी सोच के मुताबिक ढाला गया है। आप अपने बच्चों के लिए वही कर रहे हैं जो आपके पिता ने आपके लिए किया-यह क्रम अनन्त समय से चलता आ रहा है और हमेशा जारी रहेगा।

जब मैं छोटा था तो मैं एक साइकिल पाना चाहता था और मैं उस वक्त बहुत खुश हुआ जब मेरे पिता ने मुझे वह खरीदकर दी। मेरे बेटे ने हमेशा मुझसे एक मोटर साइकिल पाने की तमन्ना रखी मगर वह कभी पूरी नहीं हो पाई। मैंने उसे इस बात के लिए रानी कर लिया कि पहले वह अपने कॉलेज की पढ़ाई पूरी कर ले और फिर जो भी अच्छा हो वह खरीदे। वह समझदार निकला और उसने अपने आनेवाले कल की खातिर अपने आज को कुर्बान किया और नतीजा यह है कि आज उसके पास एक होंडा एकार्ड है।

उपाय 4: उन्हें अपना समय दें- अपने बच्चों के साथ समय बिताएं। उनके साथ खेलें, उन्हें पढ़कर सुनाएं, होमवर्क में उनकी मदद करें और उनसे उनके दोस्तों के बारे में पूछें। बोले कम, सुनें ज्यादा। उन्हें अपना दिल खोलकर दिखाने का पूरा मौका दें।

कभी-कभी बच्चों का अपने पिता के साथ अजीबोगरीब सम्बन्ध होता है। आमतौर पर अपनी मांओ के साथ उनका सम्बन्ध सहज होता है मगर पिता के साथ बोलने-चालने पर भी उन्हें आफत महसूस होती है। लेकिन समय बदल रहा है। मौजूदा समय में पिता भी बच्चों को बड़ा करने में अहम भूमिका निभाते हैं।

अगर आप पिता हैं, तो यह सुनिश्चित करें कि बच्चों के साथ आपका दोतरफा संवाद हो। यह काम मुश्किल जरूर है मगर नामुमकिन नहीं। उनके मन में यह विश्वास पैदा करें कि जब भी उन्हें जरूरत होगी आप उनके आसपास ही होंगे। जीवन के कुछ ऐसे पहलू भी होते हैं जिनके बारे में वे मां की बजाय आपसे बात करना चाहेंगे। ऐसे महत्वपूर्ण अवसरों पर उनके लिए उपलब्ध रहें।

उपाय 5: उनकी आलोचना मत करें- अपने बच्चों की अलोचना न करें, खासकर दूसरों के सामने तो भूलकर भी नहीं। अगर आप उन पर चीखेंगे-चिल्लाएंगे या पीटेंगे तो वे खुद को छोटा, परेशान और दु:खी महसूस करेंगे और तब वे और भी जिद्दी बन जाएंगे। उनके साथ ठंडे दिमाग से पेश आएं। अगर आपको गुस्सा भी आ रहा हो तो उन पर चीखें नहीं। उन्हें खुद ही मामला सुलसाने का समय दें।

उनसे असम्भव काम कर दिखाने की अपेक्षा मत रखें। बच्चों को अलोचना की बजाय उदाहरण की ज्यादा जरूरत होती है। कुछ बच्चे 10 की उम्र में कमाल करते हैं, कुछ 20 साल के होने पर तो कुछ 30 की उम्र में ऐसा कर पाते हैं। इसलिए बेसब्र मत बनें। और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अपने बच्चों की तुलना कभी दूसरे बच्चे के साथ मत करें। तुलना करने का काम बहुत बुरा होता है और इससे आपके बच्चे का खुद पर भरोसा नहीं रहेगा।

उपाय 6: अच्छा उदाहरण बनें- जैसे-जैसे आपके बच्चे बड़े होंगे वे खुद को सुधारने के तरीके ईजाद कर लेंगे जो शिक्षा, प्रशिक्षण और दूसरों के साथ सम्पर्क में आने से ही वे सीखते हैं- और सबसे अधिक तो आपके देखकर। इसलिए आप अपने बच्चें को जैसा बनाना चाहते हैं पहले खुद वैसा बनें-अपने ख्यालों, बातों, कर्मो और भावनात्मक प्रतिक्रियाओं में। बच्चे नकलची होते हैं और उनका दिमागी एंटीना आपका ही सिगनल ग्रहण करने का आदी होता है। वे आपको बहुत बारीकी से देखते हैं। उनकी उम्र देखकर बुद्धु मत बन जाएं। वे निश्चित रूप से आपकी सोच से भी कहीं ज्यादा आपके मुताबिक ढल रहे होते हैं। उन्हें ईमानदारी, निष्ठा, लगन, शिष्टाचार और विनम्रता के संस्कार दें।

खुद पर काबू रखकर उन्हें आत्म-नियन्त्रण की सीख दें। जब वे गलती करें तो उन्हें चिल्लाकर समझाने की बजाय, सही क्या है इसका

उदाहरण देकर समझाएं। याद रखें कि गुस्सा एक महंगा शौक है जिसे अत्यधिक संसाधनों वाले लोग ही पूरा कर सकते हैं। यह किसी व्यक्ति के विकास के दोष को दर्शाता है। इसलिए इससे बचें। जब नौकर आपकी चाय में एक चम्मच ज्यादा चीनी मिला दें तो उस पर गुस्सा मत करें। सोंचे कि क्या यह गुस्सा करने की बात है? लेकिन कई लोग ऐसा ही करते हैं। जो बच्चे अपने माता-पिता को नौकरों पर बरसते हुए या गुस्से में चीजें पटकते देखते हैं, वे बड़े होने पर खुद पर वैसा ही करते हैं।

उपाय 7: अपने जीवनसाथी की इज्जत करें- अपने जीवनसाथी के पीछे मत पड़े रहें, खासकर अपने बच्चों के सामने तो ऐसा कतई न करें और फिर भी अगर आपको लगता है कि आप ऐसा करते हैं तो बच्चों के सामने अलग से स्वीकार करें कि आप अपनी इस आदत से शर्मसार है और इसे छोड़ने की कोशिश कर रहे हैं। अपनी गलतियां स्वीकार कर लेने से आप और आपके दोस्त दोनों ही समझदार बनेंगे। कोशिश करके देखें। पीछे पड़े रहना दरअसल, विचारों के घालमेल, गलत प्राथमिकताएं और दिमागी बेतरतीबी का नतीजा है। यह छोटी-छोटी बातों को बड़ा करके पेश करने की आपकी गलत आदत के कारण होता है। तब एक 'चुहिया'-सी समस्या राक्षस बन जाती है। अगर आप अपने बच्चों का अच्छी तरह पालन-पोषण करना चाहते हैं तो अपने जीवनसाथी की इज्जत करना बहुत जरूरी है। मैंने अपनी पत्नी की इज्जत करने का एक आसान-सा रास्ता ढूंढ लिया है। मैंने उसकी अच्छी आदतों और व्यवहारों की एक सूची तैयार की है। यह ठीक है कि उसकी कई खराब आदतें भी हैं जो शादी के कुछ वर्षो बाद ही सामने आ गई थी। लेकिन मैंने होशियारी दिखाई और उसकी अच्छी आदतों की तारीफ करनी शुरु कर दी। मैंने यह भी महसूस किया कि उसकी इज्जत करने के लिए मुझे इस बात का इन्तजार नहीं करना चाहिए कि वह कुछ महान काम करे, बल्कि मैं उसकी उन छोटी-छोटी बातों के लिए ही तारीफ कर सकता हूं जो वह अच्छी तरह करती है।

उपाय 8: अच्छे दोस्त बनाएं- अपने बच्चों की खातिर संगत रखें। आप अपने रिश्तेदार तो नहीं चुन सकते लेकिन दोस्त चुन सकते हैं और आपको सैकड़ो दोस्तों की जरूरत नहीं होगी। एक दर्जन से कम भी काफी होंगे। आपके बच्चे आपके दोस्तों को करीब से जाना चाहेंगे-चेतन और अवचेतन दोनों स्तरों पर। वे आपके हर दोस्त के बारे में अपनी राय बनाएंगे। तब उन्हें अपने फैसले के मुताबि यह तर करने दें कि वे क्या आपने भीतर उतारना चाहते हैं और किसे बाहर ही छोड़ देना चाहते हैं। उनके दिमाग में एक बड़ा सा स्पंज है जो नए-नए अनुभवों को सोखने को बेताब रहता है। मेरा बेटा मेरे एक दोस्त की आदतों को ध्यान से देखने के बाद विनम्र, मेहनती और मजाकिया बन गया। मेरे उस दोस्त का जो सबसे अच्छा गुण उसने अपनाया वह यह कि उसने अपने आप पर हंसना सीख लिया। इन उपायों को हमने अपने अनुभवों के आधार पर लिखा हैं। आपकी निजी परिस्थितियों में कुछ कम ज्यादा हो सकता हैं लेकिन उपाय आपकी सहायता अवश्य करेंगे।

इच्छाओं पर लगाम लगाएं

मनुष्य की इच्छाओं पर कोई लगाम न रहने से आज का जीवन जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। इच्छाओं के असीम होने से मनुष्य किसी न किसी तरह से उनकी पूर्ति का प्रयास करता है। उसके लिए इच्छाओं की पूर्ति महत्वपूर्ण है, उनकी पूर्ति का माध्यम नहीं! नैतिक-अनैतिक, ठीक-गलत, उचित-अनुचित के बीच उसके समक्ष कोई भी विभाजक रेखा नहीं रही! यह स्थिति इसलिए और भी दु:खदायी हो गई है कि इच्छाएँ पूरी तरह भौतिक ताकतों द्वारा नियन्त्रित हैं! इसलिए प्रत्येक स्तर पर मर्यादाएँ खंडित हो रही हैं। मर्यादाओं के खंडन-विखंडन और विघटन के समाचार चारों ओर से निरन्तर मिलते हैं। सम्पत्ति के लिए पौत्र द्वारा दादी की हत्या! यह समाचार पढ़ते ही अपने आप से वितृष्णा होने लगती है! दादी-पोते का सम्बन्ध दुनिया के सबसे मधुरतम सम्बतो में से एक है! क्या आज से तीन दशक पहले ऐसी घृणित घटनाओं की कल्पना की जा सकती थी? नहीं! यह इच्छाओं पर से लगाम हटने का दुष्परिणाम है। देश के साथ गद्दारी के मामले पहले अपवाद स्वरूप होते थे। आज शिक्षित-प्रशिक्षित राजनयिक ही देश के हितों के साथ खिलवाड़ करने से पीछे नहीं हटते। हितों के साथ यह खिलवाड़ छोटी-छोटी सुविधाओं और रियासतों के लिए किया जाता है। इसी बात को थोड़ा आगे बढ़ाएँ! पहले राजनीति में लोग त्याग की भावना से आते थे, आज राजनीति में अपनी आर्थिक महत्वाकांक्षाओ को पूरा करने के लिए आते हैं। लाखों-करोड़ों रूपये के घोटाले, राजनीतिक हत्याएँ, यह सब हमारे समय के मुहावरे बन गए हैं!

पहले साधु-सन्सायी का चोला व्यक्ति अपनी इच्छाओं का त्याग कर करता था। आज लोग साधु-संन्यासी अपनी अधूरी भौतिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए बनते हैं। लगता है कहीं बड़ी भारी भूल हो गई है क्योंकि यहां तो आवा का आवा ही खराब हो गया है। इसलिए जरूरी है कि हम अपनी इच्छाओं पर लगाम लगाएं। इच्छाओं के अनियंत्रित होने से हमारा समूचा मानसिक, आर्थिक, भावनात्मक संतुलन गड़बड़ा गया है। इसलिए समाज को सद्कर्मों के लिए प्रेरित करने वाले व्यक्ति तथा समुदायों को इच्छाओं पर लगाम लगाने संदेश देना चाहिए। यह संदेश आचारण युक्त होगा तभी सार्थक परिणाम मिलेंगे।

वर चाहिए

प्रतिष्ठित वैदिक परिवार की सुन्दर स्वस्थ, संस्कारी, गृहकार्य में दक्ष ब्राह्मण युवती, जन्म-19 नवम्बर 1983, कद- 5'-4'', वर्ण-गेहूंआ, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., निवासी दिल्ली के लिए गुरुकुलीय स्नातक या आर्य समाजी परिवार का दहेज रहित विवाह हेतु वर चाहिए। (निर्दोष, नाम मात्र का विवाह)। सम्पर्क- 09810796203, समय-सायं: 5 बजे से रात्रि 9 बजे तक। E-mail: ekomkaar.rpsharma@gmail.com

(पृष्ठ 6 का शेष)

सहयोग किया और टंकारा ट्रस्ट को भी अपने सम्भाला सम्मेलनों में पिता जी की तरह ही तन-मन-धन से अपने युवा साथियों की पूरी टीम बनाकर सफल आयोजन करते हैं यह वेद के वाक्य को जीवन में चरितार्थ कर रहे हैं। अब आप अनुमान लगा सकते हैं कि सहगल जी ने तैयारी में कितना समय परिवार को भी दिया होगा और आप अत्यन्त प्रसन्न होगें। इनके पौत्र भी अनुवर्ती होकर महर्षि दयानन्द जी के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए संकलित है। आज इनसे प्रेरणा लेकर ''अनुव्रत पितु: पुत्रों'' प्रत्र पिता के अनुव्रती हो को सार्थक करने के लिए आज से ही पुरुषार्थ प्रारम्भ करना है। वर्ष में कई बार टंकारा जाकर वहां की व्यवस्था को देखना धन की पूर्ति करना एवं सम्मेलन सभी का जैसे कार्यो को समय पर सुव्यवस्थित पूरा करना यह पिता श्री की संयोजन शैली से ही अभिमन्यु की तरह चक्रव्यूह का युद्ध सीखा है। आप सभी का स्नेह मिलेगा तो यह आर्य होनहार युवक आर्य समाज के देदीप्यमान नक्षत्र की तरह अपनी विशेष पहचान बनाये। प्रभो इन्हें सद्बुद्धि सामर्थ्य प्रदान करें।

– गुरुकुलपूर, पो. बहादुरगढ़, जिला-हापुड़, उ.प्र., मो. 9837402192

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल

के तत्वावधान में

व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण

वार्षिक शिविर-2015

दिल्ली में जून 2015 के अन्त में लगाया जाएगा।
कृपया समय से अपने नाम दे देवें।

निवेदक

साध्वी डा. उत्तमायति	**मृदुला चौहान**	**आरती खुराना**
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव
मो. 9672286863	मो. 9810702760	

ऋषि जन्मस्थान के सहयोगी सदस्य बनें

आर्य समाज के ऐतिहासिक स्थलो में टंकारा (ऋषि जन्मस्थान) का एक विशेष महत्त्व है। प्रतिवर्ष शिवरात्रि के दिन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर ऋषि भक्त यहाँ पधारते हैं। प्रत्येक ऋषि भक्त अपनी श्रद्धा और विश्वास के साथ यहाँ अपनी श्रद्धांजलि उस ऋषि को देता है। कुछ ऋषि भक्त यहां प्रतिवर्ष कई वर्षो से पधार रहे है यह भी उस ऋषि के प्रति श्रद्धा का रूप है।

उपस्थित ऋषि भक्त आग्रह करते है कि इस स्थान से कैसे जुड़ा जाए जिससे ऋषि घर से आत्मियता बनी रहे। पिछले वर्ष ट्रस्ट ने निर्णय लिया है कि वार्षिक सहयोगी सदस्य बनाए जाए। प्रत्येक इच्छुक ऋषि भक्त प्रतिवर्ष 1000/- रूपये देकर सहयोगी सदस्य बन सकते है। इस सहयोग राशि की स्थिर निधि बनाई जाए और उसके ब्याज को ट्रस्ट गतिविधियों में लगाया जाए। एक करोड़ की इस स्थिर निधि के अधिक-से-अधिक सहयोगी सदस्य बनकर/बनाकर ऋषि घर से जुड़ सकते है। 10000 सदस्य पूरे भारत से बनाने का लक्ष्य है।

टंकारा ट्रस्ट को दी जाने वाली राशि आयकर से मुक्त है।

निवेदक

सत्यानन्द मुंजाल	**शिवराजवती आर्या**	**रामनाथ सहगल**
(मैनेजिंग ट्रस्टी/प्रधान)	उप-प्रधाना	(मन्त्री)

A Beautiful Life
does not Just Happen
It is built Daily by
Prayer, Humility
Sacrifice and Hard Work

टंकारा समाचार मार्च, 2015

Delhi Postal R.No. DL (ND)-11/6037/2015-16-17

अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसेंस नं० U(C) 231/2015-16-17

Posted at Patrika Channel, Delhi R.M.S. on 1/2-03-2015

R.N.I. No 68339/98 प्रकाशन तिथि: 23.02.2015

मुद्रक व प्रकाशक–रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिंटर्स, 2199/63, नाईवाला, करोल बाग, नई दिल्ली–5 मोबाइल: 9810580474 से छपवाकर कार्यालय महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–1 दूरभाष : 23360059, 23362110 से प्रकाशित। संपादक : अजय